देव सेव किय विप्र। अप्प दंडोत पंच किय॥
तुलसीदल हर अरपि। मृत्य असिवर कौ मंगिय॥
चरनोदक मुष धार। राज बैठ्यौ बजरंगिय॥
सत धेन शृंग सोवन्न मढि। षुर रज्जत राजंत अति॥
शृंगारि दत्त दिय दुजुन कंह। पठहि पाठ जे बेद प्रति॥ छं०॥ ६८॥

## कुमारी कन्याओं और ब्राह्मणों को भोजन करवा कर राजा का सब सामंतों सहित भोजन करने बैठना।

नव कन्या पहिराय्य। दान नवग्रह कौ कीनौ॥
इच्छा भोजन पूछि। सहस विप्रन कौं दीनौ॥
भोजन किय जिहिं ठौर। सब्ब भर तहं पधराए॥
नित्य करम करि इतौ। तहाँ अप्पन प्रभु आए॥
पांवरी पाय जूरो सिरह। षीरोदक अरु पीतपट॥
कर माल जपत नंद लाल मुष। गुण विसाल संग विप्र थट॥
छं०॥ ६९॥

गो गोमय चोको। विचित्र चित्रे अति चावक॥
लीक धवल धर हरित। धरी सिगरी भरि पावक॥
कोमल आसन मंडि। मंडि बाजोठ अग्र मुष॥
तहां बैठ्यौ चहुआन। गंग सम्हौ उतर[1] रुष॥
सामंत सूर दष्षिन दिसा। पत्ति मंडे सोभंत अति॥
संमुहो चंद बरदाय बर। सबै दिष्षि यहि दैव भति॥ छं०॥ ७०॥

## राजसी भोजन परोसे जाने का वर्णन।

ऊंकार पूरान। कियौ पंडित प्रवीन दुज॥
श्रीरघुनाथ चरित्र। गाय भंजनह बीस भुज॥
नूत नूत पल्लव पषारि। पत्रावलि मंडिय॥
धोय तोय बिन छिद्र। धरे दोना ढिग[2] ठंडिय॥
कोविद उदार उज्जल दुजन। परुसन कौ आरंभ किय॥

(१) ए. कृ. को. मुख। (२) ए. कृ. को. गंठिय।

भरि छाबं काव को कबि कहै। प्रथम अनूपम पूप लिय॥
छं० ॥ ७१॥

## परस की विधि और जिनसों का वर्णन।

दूहा॥ पूप अनूप परूसि पुनि। पुरी सुष्प पुरि मेलि॥
ललित लूचई लै चलै। [1]ऊँच रतों बिधि बेलि॥ छं०॥ ७२॥

## पकवान और मिठाई।

मोतीदाम॥ भरि [2]पीठि भींतर लोन सिलाय। कचौरिय मेलि चले दुजराय॥
धरे निसराज सिषा जनु फेरि। धरे ढिग वातर भाँवर हेरि॥
छं० ॥ ७३॥
सुते बर घेवर पैसल पागि। लषै चष [3]फेरि गई उर आगि॥
अलेबनि जेब कहै कवि कौन। महा मधु माठ मिटावन मौन॥
छं० ॥ ७४॥
सुधारस फेन कि फेनिय आय। तिनं पर बूर गरूर मिलाय॥
करे कर सक्करपारे सुधार। महा दुति मुत्तिय सेव सिंघारि॥
छं० ॥ ७५॥
बनी तिय नारि कसार भरित्त। कलपानिय बानिय एगि धिरत्त॥
करी सबनी सब ही महि सार। गिंदोरन और करै सब आर॥
छं० ॥ ७६॥
धरे पुरमा अरु पिंडषजूर। बिही अषरोट निही सुष पूर॥
नय नसपातिय पैठै पकाय। दह्यौ रिय दीनिय भूषन गाय॥
छं० ॥ ७७॥
पगे मधु पान पनंगह बेलि। दए गुर सक्कर-अम्रत ठेलि॥
बिए पकवान धरे बहु भांति। धरे तिन ऊपर पापर आनि॥
छं० ॥ ७८॥
दूहा॥ आनि सँधाने सब धरे। मूल फूल फल कंद॥
मैदा के पैदा करै। सुमन मेलि मक्करंद॥ छं०॥ ७९॥

(१) ए.कृ.को.-उंचरची। (२) ए.कृ.को.-परि पिछिय। (३) ए.कृ.को.-पारि।

## अचार वर्णन।

बचनिका॥ करि कंज पुंज धारे। रचि चंपक सु धारे॥
बहु वेलि है चँवेली। कटनी कनेर केली॥
बकलं बधूक आने। घनसार डार साने॥
मचकुंद कुंद कीने। करि केवरे नवीने॥
कल केतकी किंति कौ। पुनिं पाडरं जिति कौ॥
जुहियं जगत.जैनी। भ्रम भूलि भौंर सेनी॥ छं० ॥ ८०॥
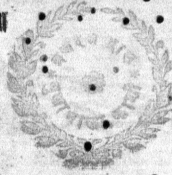
## चरबन वर्णन।

दूहा॥ भांति भांति.चरबन रचै। चना.चिरुंजी चारु॥
चोंरा चाहत चेंन [1]चष। मिलि मूग मदु घन सार॥छं० ॥ ८१ ॥
करे कसेरू.करहरी। गोंद गटा ठट ठानि॥
पय के बहु घटि कर करे। कर कपूर [2]पुट वानि॥

## तरकारियां और गोरस का वर्णन।

भुजंगी॥ घरौ पीर औटली करी पीर ताकी। बियौ जंपियै किं सुधादासि जाकी॥
महा सुद्दि घृत घालि बूरा [3]मिनाई। सबैं सूर सामंत जीमैं सराई॥
छं० ॥ ८२ ॥
घरे षट्ट घेरे रु घाटे जुड़ाने। बरा बिद्द राका समं सोधि आने॥
किते विंजनं वेसनं के बनाये। करन्ना करोंदी कि [4]किंदुरे गनाये॥
छं० ॥ ८३ ॥
नए नूत नींबू नए नालिकेरं। रची नारिंगी नासपाती सु मेलं॥
करे अम्रतां.कैंथ सध्यं विजोरें। मनों डार वें पारिकें आनि मोरे॥
छं० ॥ ८४ ॥
करारं कढी मट्ठि भींजी पकौरी। बरी मूंगरी [5]पाखरा षट्ट मोरी॥
महा मृद्दु मैदान की मेलि रोटी। कछू जामिनी नाथ तें जोति मोटी॥
छं० ॥ ८५ ॥

( १ ) ए. कृ. को.-सुख। ( २ ) ए. कृ. को.-पुर। ( ३ ) ए. कृ. को.-बनाई।
( ४ ) ए. कृ. को.-किंदूरी। ( ५ ) ए. कृ. को.-मांषकी।

धूरे भोजनं मंडनं आनि माँडै। भिगे सक्करा षीर सों सेन छाँडै॥
रवा केरु आमोइन देव नाए। घने घृत्त अंगा करी षोभि लाए॥
छं० ॥ ८६ ॥

कढी कट्ठ मैंदा पिठी मेलि षाटी। बनी बेटई अंगुली षात चाटी॥
रची रोटियं मिश्रियं चैन पायौ। तहां सालनं आन रानी पठायौ॥
छं० ॥ ८७ ॥

लै लै विप्र दौरे सुरंधेर तारू। बने सूरनं बेगनं रोलि मारू॥
करी बानि बिंबा गयौरा परोसे। बरे लै धरे बीरजे बेस रोसे॥
छं० ॥ ८८ ॥

सदन सेमि सं मांच चंडा चलाए। ढका देत से टेढ साढं किधाए॥
कंकीरा करेला मुरेला सराहे। भली भांति भाडानि के ढंड चाहे॥
छं० ॥ ८९ ॥

रवा संफरी छोंकरी लैधरी ते। कली कचनारं भलीजे करीते॥
धिरत्तं भरत्तंभ टाकौ सुधारयौ। नहीं बाकलं बिजूरा में पधारयौ॥
छं० ॥ ९० ॥

रच्यौ राइ तौनाय तौ लोंग मिरचें। धना सुंठि लै राइ मिल्लाय सिरचें॥
परोसे नवीनं चनाके निमोना। मिरी भेलि नींबू धरे केलि दीना॥
छं० ॥ ९१ ॥

दूहा ॥ अर उर कर परिकर लए। संभरिवै सुष माँगि॥
जनु (१)पटुता करि पांनिसों। षटरस राषे षाँगि॥ छं० ॥ ९२ ॥
सुर सँधानौ सुर जनौ। धर्‍यौ दही सों सांधि॥
फूल फूल फल के जिते। तिते करे कर रांधि॥ छं० ॥ ९३ ॥

## दाल भाजी और खटाई भरी पकौड़ियों का वर्णन।

चोटक ॥ सरसों सूआ के साक जिते। गिरिराज रुराथिय रांधि तिते॥
बथुआ बड़ साग बवोत बने। बरबाय बिरंग सवाद सने॥
छं० ॥ ९४ ॥

(१) ए. कृ. को.—बहुता।

चनक अरु पोचिय चूक बन्यौ । तहां [1]सोंरिय त्यों रन आय गन्यौ
लगि डाड पयाल पथाल कसौ । मघवा उतकै होय बालक सौं ॥
छं० ॥ ९५ ॥

दिव दारु सुदारु है साकंन में । मुर बातिय में थिय पाकन में ॥
नव पल्लव नीच रु नाय धरौ । करई गति काढि सु दूरि करौ ॥
छं ॥ ९६ ॥

भरि भाजन भात उलेंड इतौ । भर भीमन जेंइ सकंत जितौ ॥
तंबहीं [2]पसवांयत भत्त लियं । सुकमार सपेद सुगंध कियं ॥
छं० ॥ ९७ ॥

अरुन बरुन पुनि पीत रच्यौ । इक इक्क संन मुष कोच सच्यौ ॥
मसुरी मुंगै माष चना बिधि चौ । दधि धोय [3]सुधारियदारि सुचौ ॥
छं० ॥ ९८ ॥

रसरा मठदै पुट केसर कौ । कछु आननही सनमे सरकौ ॥
बरु बारि बराब्बर घृत्त लयौ । [4]सदसुम्भित सोसुर भीन अयौ ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कुसलं सुसलं समधार परै । अनषंडित मानहु गंग झरै ॥
अघनी बटि वास तिर्मास परे । हठिवास सुवासनि आभ भरै ॥
छं० ॥ १०० ॥

चकतार अपार सवा दल सै । बनि भूति अभूर्तनि वंद गसे ॥
सुहितं उर स्हल कयं परसं । द्रिगदेषि सरंबक सेत रसं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

मधु मीन रचे पचि भंति इति । कनवज्जनियं कनवज्ज जिती ॥
घन षंड मरग्गल सों सपजे । जिन बासन बार्निक छम्म तजे ॥
छं० ॥ १०२ ॥

## पछावर की परस का वर्णन ।

दूहा ॥ जेंइ अघाने जठर पर । जलपिय फेरति पानि ॥
तुच्छ षुधा पाछें रही । तब लई पछावरि बानि ॥ छं० ॥ १०३ ॥

(१) नो०-त्योंरिय । (२) ए. कृ. को.-पसकायत । (३) ए. कृ. को.-सुधारसदारि । (४) ए. कृ. को.-दस ।

मोतीदाम ॥ बढ़ों रुचि देषि कढी कर लेत। बिचैं मिरचैं मिलि लोंग समेत ॥
बिकत्त तिकत्त सुषट्टिय षार। लई सुष मंगि हुई मनुहार ॥ ॥
छं० ॥ १०४ ॥

फरिबां कठ पत्तनि कीं सब सानि। बंध्यौ दधि आनि धस्यौ ढिग छानि ॥
मट्ठा दधि छानि रु बानि बघारि। जहां मिलि जीर घनं घनसार॥
छं० ॥ १०५ ॥

घनं बहु जंबुअ अंबुल मेलि। निचोरिय दारिम द्राष सुठेलि ॥
गऊ पय औटिय धार उभ्भांटि। धरे भरि भाजन मिश्रिय बांटि ॥
छं० ॥ १०६ ॥

मिली मधि जारक षारिक चूक। सवारिय झारि भए भष भूक ॥
भए चिपतें सब सामँत साथ। कहें सुष कित्ति रहं षचि हाथ ॥
छं० ॥ १०७॥

सँजोगिय स्वामिनि कौ परधान। पंषा गहि प्रीति करै सनमान ॥
कहै सब सथ्थ भई श्रम भीर। क्षमा करियौ चित चूक सधीर ॥
छं० ॥ १०८ ॥

कहै सुष सामँत श्रीमुष राज। भए हम पूरन पावन आज ॥
तहां तप तो इक हथ्थ धुवाय। अरच्चिय दच्छि करंदम काय ॥
छं० ॥ १०९ ॥

दए सुषवास कपूर भुआइ। मँहे अप अप्प मिलावन जाइ ॥
जिमावत औसर यों रनिवास। इसी भँति राज रह्यौ इक मास ॥
छं० ॥ ११० ॥

भई चढती चढती मनुहारि। दिन प्रति हास बिनोद [1]उचारि ॥
छं० ॥ १११ ॥

## आखरी दिन चलते समय राजा का शिकार करने की तैयारी करना और प्रोहित गुरुराम का मना करना।

दूहा ॥ चल्यौ अंत कै द्योस न्रिप। बरज्यौ प्रोहित राम ॥
कुसल भई अरु रस रह्यौ। क्यों न पधारहु धाम ॥ छं० ॥ ११२ ॥

( १ ए. कृ. को.-उधारि।

मृगया सदा विगार हुअ। सुनौ कहूं समुझाय॥
आप लह्यौ रषि राज पै। दसरथ पंडव राय॥ छं०॥ ११३॥

## राजा का शिकार के लिये तैयारी का वर्णन।

हँसि नरिंद हय पर चढ्यौ। भई निसान धमंक॥
सत्त समंद कलँमलै। संकर चित्त चमंक॥ छं०॥ ११४॥

कवित्त॥ चमकि रुद्र चग षुले। चमकि सिर टुले सेस महि॥
भरकि उठे दिगपाल। उरकि दिगपाल सोच रहि॥
हलकि हले गिरि मेर। हलकि कुब्बेर संक हिय॥
धरकि धरा धहराय। धरकि दिग्गजनि कंप किय॥
आषेट हेट प्रथिराज की। एक मुष्य कवि को कहै॥
उड़ि धूरि पूरि अंमर भर्‌यौ। रबिन ब्योम मंडल वहै॥
छं०॥ ११५॥

कंपं गंगन छिन्न। छिन्न नन घंनं सुझ्झै॥
नद्द वद्द भरि कान। आननन ताम सु बुझ्झै॥
सहस सीरषा पुरुष। सहस द्रिग सहस हथ्थ कौ॥
दलि तरु चक्कित छिन्न। भिन्न भद्द अन्न अथ्थकौ॥
हय गयं पयाद पायान मय। अकथ कथ्य कविचंद कहि॥
डगमगहि पिंड ब्रह्मंड कौ। आज राज प्रथिराज रहि॥
छं०॥ ११६॥

दूहा॥ रह्यो नहीं संभरि धनी। चढ्यौ चित्त अति चाव॥
उगमगि पहुमि पयान भर। ज्यों जल रीती नाव॥
छं०॥ ११७॥

## शिकारी सामान, बन की शोभा और बनैले जीव जन्तुओं का वर्णन।

पद्धरी॥ चढ़ि चल्यौ चाद चहुआन भान। सुर नाग नरनि भूल्यौ वसान॥
धमकी धरन्नि धुरतार भार। बढि संक लंक संसार सार॥ छं०॥ ११८॥

(१) मो.-चंपि (२) ए. कृ. को.-अंतर।

लिय डोरि डोरि संकरन खान। चढ़ि चले रथ्थं पथ चीतिवान॥
म्रगयुक्त हस्त हुंकरत मुष्प। फँद बंधू स्रृँग संग्राम रुष्प॥
छं० ॥ छं० ॥ ११६ ॥

जुर बाज कुही तुरमती धूत। को अन्य गनै पंषी अभूत॥
चहुआन गयौ उद्यान दूरि। गिरवर उतंग बन सघन पूरि॥
छं० ॥ १२० ॥

उज्जार जार सुभझै न मग्ग। भरि सकै कौन भर डक्कि डग्ग॥
सीस 'पसि रस्स सामर सिंहारि। कहुं साल ताल सागोन सार॥
छं० ॥ १२१ ॥

कहुं झौक झुंड झिर हान्ति झार। कहुं बेलि बेर बेकल अपार॥
कचनारि कोह गिरि नारि आरि। गुरजैन गैनं परसंत चारि॥
छं० ॥ १२२ ॥

अनछिद्र छांह सों करिय छोर। कपि कच्छ बेलि कुपि त्याग ठौर॥
कूं परित रत्त करलैं सरल्ल। षट तीन भार तरु तें तरल्ल॥
छं० ॥ १२३ ॥

फुल्लित फल्लित फबि चारु फेर। वसु जाम झाम पसु पंछि घेरि॥
कहुं म्रगमयंद मातंग मत्त। सु सल्ले सियाल सूकर भिरत्त॥
छं० ॥ १२४ ॥

कहुं रीच्छ इच्छ सोवंत छांह। बंदर लंगूर कंगुरन मांहि॥
फूंकर फनिंद नर को तरन्नि। सब सकै कोन कोविद बरन्न॥
छं० ॥ १२५ ॥

दूहा ॥ हरि हरि हरि बन हरित महि। हरन पिष्षयै आंषि॥
सारँग रुकि सारँग हने। सारँग करनि करष्षि॥ छं० ॥ १२६ ॥

## शिकारी पलुए जानवरों का कौतुक।

कवित्त ॥ आषेटक रमि राज। बाज जुर कुही छंडि कर॥
[1]सेन सेन बाराह। हनहि बरहक्कि मक्कि उर॥

(१) ए. कृ. को. परि।

बागुरी परि उरभंत। रोझ सांमर असंष सुस॥
और जीव को कहै। उहै भेडलह ज्वाल कस॥
बन बीच कीच मचि श्रोन बहि। भनिन चंद परिमित लहै॥
सोमेस नंद आनंद सर। क्रीड कोष जंतुन सहै॥ छं०॥ १२७॥

## जंगली जानवरों की स्वच्छन्दता और उनके शिकार होने का वर्णन।

लघुनराज॥ बाराह राह रोकयं। बधिक्कयं. विलोकयं॥
हस्ति दूब अंकुरं षनंत दड्ढ बंकुरं॥ छं०॥ १२८॥
षुरं अंवन्नि[1] उप्परं[2]। ललित्ति बेलि बिप्परं॥
कली कुसुंम मंजरं। अरून्न नील पिंजरं॥ छं०॥ १२९॥
तजंत ते मधुक्करं। करंत मुष्प हुंकरं।
रोमंच अग्ग उब्भरं। डरंत देषि सुब्भरं॥ छं०॥ १३०॥
लचतं भूमि उद्दरं। बरन्न स्याम बद्दरं।
सपेद दंत कंतयं। सुजानि बग्ग [3]पंतयं॥ छं०॥ १३१॥
टगट्टगंत नेनयं। तारकजेम रेनयं।
अहार कंद मूलयं। भयौ सुकंध थूलयं॥ छं०॥ १३२॥
डढाल चीय भूलियं। फिरंत नद्द कूलयं।
न्रिमल्ल नीर बीचयं। करंत लोटि कीचयं॥ छं०॥ १३३॥
सुनंत कूह सेनयं। लग्यो सुकान दैनयं।
चमक्कि चष्प पुल्लयं। इकल्ल उट्ठि चल्लियं॥ छं०॥ १३४॥
भिरंत छंडि भज्जयं। निरक्ति दैन रज्जयं।
प्रपत्तयौ धनुद्धरी। सिकार भाल गुद्दरी॥ छं०॥ १३५॥
हरष्षि नाथ संभरी। ज्यों भोर मेघ डंबरी।
हलक्कि फौज उप्परी। दिसा दिसान विष्फुरी॥ छं०॥ १३६॥
पँवार जैत बग्गरी। हते न्रपत्ति अग्गरी।
विकट्ट जाल जंभरी। अठार भार षंगरी॥ छं॥ १३७॥

(१) मो.-जंत्रन। (२) मो.-उप्परं। (३) मो.-पंतयं।

ग्रये सुचूक्कि ढाहरं। बवक्कि उठि नाहरं॥
* * * * * * ॥छं०॥ १३८॥

## जैतराव का सिंह को मारना।

कवित्त॥ सोर घोर सुनि श्रवन। रवनि रवनीय मंद जगि॥
निडर अंग ऐंडाय। बाघमुख पग्गि क्रोध अगि॥
अधर दंत चाटंत। चाटि हथ्थल हुस्यार हुअ॥
पटकि पुंछ मच्छर दहारि। उच्छारि उछंग भुअ॥
पर्‌यौ सुजैत धाराधिपति। अति सरीस पटक्यौ सुधर॥
उठि हक्कि हाक ओझर हन्यौ। गयौ तुट्टि करिवार कर॥छं०॥१३९॥

## बलिभद्र का सिंहनी को मारना।

सिंघ सँघार्‌यौ पिष्षि। पिष्षि सिंघन बबकारिय॥
समुष राज प्रथिराज। निरखि आवत ललकारिय॥
मनहु माघ केमास। मेघ कल बायनि बिस्तरि॥
यों कँपै सह काय। हाय मुष उटहि न सस्तर॥
बलिभद्र राय बलिवंड धपि। कर कृपान बाही सु बर॥
उछरंत लंक कटि अद्ध परि। अद्ध आय लग्यौ सु कर॥छं०॥१४०॥
अध लग्यौ कर आय। ताहि जम दट्ट घाय किय॥
भाल जाल महि हन्यौ। छेदि बेहाल ठेलि दिय॥
घरी च्यार सब सथ्थ। रह्यौ थहराइ लग्गि टग॥
ग्रेह देह अरु नेह। गए भय भुल्लि मग्ग जग॥
हँसि कहै राज कविचंद सौं। ए भर अरि असुपत्ति सिर॥
करतार लज्ज रष्षै कलह। कटे कन्ह से जंग थिर॥ छं०॥ १४१॥

## राजा का गत घटना पर सोच करना परंतु कवि का भुलावा देकर उसे शिकार से फिराना।

कहै चंद कवि तथ्य। राज गत बत्तन सूचहु॥
जुहै सु मानुह दिग्घ।। सोग संतापन मूचहु॥

धरहु मन्न अग चलहु । पग्ग पब्बय उज्जारहि ॥
बहु बराह रुकि राह । दाह बाहं बर मारहि ॥
भुल्लाय बत्त चहुआन कौं । चल्यौ भट्ट सुष अग्र धरि ॥
न्रम्यौ न मिटै न्रिम्मानं कछु । तहां इक्क आइय षबरि॥छं०॥१४२॥

## कुछ सामंतों का राजा को एक सिंह की सूचना देना ।

सोलंषी संतोष दास । नंदन नारायन ॥
लुब्छ-पटे पग दौरि । पवन बिन न्रिपति परायन ॥
आसा लगि धावंत । रहै दासा तन लीयै ॥
रेन द्यौह जानेन । रहै हिय हुकुम जु किय्यै ॥
तिन कह्यौ आय प्रथिराज सहुँ । सिंघ एक भाल्यौ निकट ॥
निठुर निसंक कंदर मँड्यौ । बीज तेज लोचन बिकट ॥छं०॥१४३॥

## राजा का सूचना पाकर सिंह की खोज में चल पड़ना ।

गाथा ॥ यों सु न्रपति अवन्नं । गवनं कीन लीन कोवंडं ॥
कोमल पद संचारं । उच्चारं कोमलं भासं ॥ छं० ॥ १४४ ॥
केभरं अग्गं पच्छं । केभर वास दच्छिनं अंगं ॥
दारा ग्रं दुज राजं । ढारं तेन पारियं छेरं ॥ छं० ॥ १४५ ॥

## होनहार की प्रभुति वर्णन ।

कवित्त ॥ जलधि जनक ससि तनौ । और अम्रत्त तन [1]तातन ॥
बंधु धनंतर वैद । पोषि रष्षन वपु पातन ॥
लच्छि बहनि बुध बदै । विषागु बल्लभ बहिनेऊ ॥
भव भूषन किय भाल । कुटम उड़गन गन केऊ ॥
लग्यौ कलंक घटु जाइ घटि । इक्क निसा पूरन्न रहि ॥
प्राचीन कीन लग्यौ कठिन । सु क्यौं मिटै सिरजंत महि ॥
छं० ॥ १४६ ॥
हरि कर धरै पषान । देव निरवंसी रष्षै ॥
बलि दव्वे पाताल । अभष भष पावक भष्षै ॥

( १ ) ए. कृ. को.-तायन ।

ब्रह्मपूज पर हरी। रुद्र कापाल लगायौ ॥
इंद्र अंग भग भई। सुक्र रषि नेन भगायौ ॥
सतवती सीय दुष पाइ जिय। रसाताल गइ फट्टि भुत्र ॥
नृप नघुष नागपन भुग्गयौ। नमो नमो सिरजंत तुत्र ॥
छं० १४७ ॥

बिछुरै नल दमयंति। रहे हरचंद नीच घर ॥
नीरद नारी भए। श्राप पायौ दसरथ्थ भर ॥
राम बसे बनबास। पंडव अनषंड विपति सहि ॥
राह लगे विन राह। भयौ बिय टूक चंद कहि ॥
बपु जरि अनंग हुत्र अंग बिन। नरग राज क्रकिला सु हुत्र ॥
गजमुष गनेस अजमुष दछिनं। नमो नमो सिरजंत तुत्र ॥
छं० ॥ १४८ ॥

सायर षारत सच्यौ। शृंग रिषि सच्यौ शृंग सिर ॥
पग पंगुर सनि देव। पंग हनमंत संत चिर ॥
जच्छि राज की अच्छि। पिंग इक भई सर्प षत।
परसुष रावन राव। अंध कुर रावनं दिषत।
भगवंत भिक्ष कर तन तज्यौ। पारथ पुरषारथ गरयौ ॥
विक्रम नरिंद वायस भय्यौ। कासिर वारौ निब्बयौ ॥ छं० ॥ १४९ ॥

## सिंह के धोखे से कंदरा में धुआं करवाया जाना।

दूहा ॥ कंदर अंदर धूम किय[1] सिंघ भरम प्रथिराज ॥
पुब्ब पुरान नहो सुन्यौ। अति गति होत अकाज ॥ छं० ॥ १५० ॥

## धुआं होने पर कंदरा के अंदर स्थित मुनि को कष्ट होना और उसका घबड़ा कर बाहर आना।

पद्धरी ॥ चिन पच कट्ठ लगि उठी झार। गइ गुहा मंझ धसि धूम धार ॥
चट पट्ट सद्द सुनियै न कान। फुट्टिय सु झाल छुट्टै औसान ॥
छं० ॥ १५१ ॥

(१) मो. हवंत।

सब जीय जंत भजि सैल तज्जि । धरराय झार पावक गरज्जि ॥
चष श्रवा संकि पारंत चीस । कलमलिं मुनिंद मन भई रीस ॥
छं० ॥ १५२ ॥

कोमल सु कमल द्रग श्रवै नीर । रद चंपि अधर कंपत सरीर ॥
जट जूट छूटि उरझंत पाय । म्रग चरम परम नंष्यौ रिसाय ॥
छं० ॥ १५३ ॥

तुमि तोरि डारि दिय अच्छ माल । निकस्यौ रिषीस बेहाल हाल ॥
गहि दर्भ हस्त वर नीर लीन । प्रथिराज राज कहुं श्राप दीन ॥
छं० ॥ १५४ ॥

हम तप्प वप्पु साधंत साध । नर सूं विरुद्ध नाहिन अराध ॥
फल पत्त ग्रंस पालंत प्रान । सब संग त्यागि सेवत उद्यान ॥
छं० ॥ १५५ ॥

कहुं रंक राइ जांचहि न जायि । नन जीव जंत आवै सँताय ॥
निर वैर काल काटत कठिन्न । भव सिंधु मध्य तें भए भिन्न ॥
छं० ॥ १५६ ॥

नन इच्छ भछ्य वर भोग जोग । कहि चूक हमहि सँतवत लोग ॥
करूं भसम भूम पब्बय समेत । सुषि सरित सिंधु रष्यौ बरेत ॥
छं० ॥ १५७ ॥

ना रयों चिन्ह पठ तीन भार । तब होय चेत संसार सार ॥
... .... .... .... । .... छं० ॥ १५८ ॥

## ऋषि का शाप देने के लिये उद्यत होना ।

कुंडलिया । तब अचेत चेतै सुचित । जब लग्गै सिर मांहि ॥
इह कहि आपन कों भयौ । गही पुरष इक बांह ॥
गही पुरष इक बांह । गेंन ते उतरत तच्छिन ॥
कहै निरा अपराध । साध पीरेंन तम्मि चिन ॥
तमि चिन पचम तोरियै । बिना सँतापै सब्ब ॥
ताहि दंड किन देहु भुंकि । जिहि दुष दीनौ तब्ब ॥
छं० ॥ १५९ ॥

कवित्त ॥ सुरहि बच्छ मृगराज। छवा गजराज जथ्थ थल ॥
चिचक हरिन बराह। राह पीवंत इक्क जल ॥
आष दृष्षि चष अग्ग। घात मंजार न मंडै ॥
फ़न करि पवन भषंत। मोर पंनग नह षंडै ॥
परताप मथ्थ गुरु हथ्थ कौ। नको जीव जीवह भषै ॥
तिहि जियत आज रिषिराज कहि। कंदर बैसंनर धषै ॥
छं० ॥ १६० ॥

## ऋषि का चुल्लू में जल लेकर शाप देना कि जिसने मुझे कष्ट पहुंचाया वह शत्रु द्वारा अन्धा किया जाय।

गाथा ॥ इहि रिषि कहि बरबैनं। तजि संसार आपिधं रायं ॥
मोद्रिग जिहि दुख दीनं। तास तुम चच्छ कढ्ढाइं ॥ छं० ॥ १६१ ॥

कवित्त ॥ कं अंजुलि कुस पकरि। कहै रिषराज सुनहु सब ॥
जिहि मो द्रिग्ग दुष्षए। निरा अपराध आय अब ॥
ता जुग लोचन जोनु। अयनजुग बीतत कढ्ढय ॥
मन बयन्न नहि टरै। विप्र षिष्षि षिष्षियों रट्टय ॥
जितिक पीर हम भोगवैं। भूमि लोक अवलोक इहि ॥
सत गुनी विरधता होइ चष। चल्यो चाइ मुनि ईस कहि ॥
छं० ॥ १६२ ॥

## ऋषि का शाप सुन कर पृथ्वीराज का भयभीत होना।

सुनिय बयन्न श्रवन्न। कंपि प्रथिराज थरथ्थर ॥
जिते सथ्थ सामंत। सूर उर चास धरब्बर ॥
गये बदन कुंमिलाय। सक्कि अति अधर अद्ध उध ॥
बोलत बोल न बनै। [१]सनै संताप साप दध ॥
रिषि आप दाप कौ अंग में। को ठिल्लै पल एक लगि ॥
जंगलन जाइ नन जाइ घर। भरि न सरक्कै भूप डग ॥
छं० ॥ १६३ ॥

(१) ए. कृ. को.-मनें।

## कविचंद का ऋषि के पैरो पर गिर कर क्षमा मांगना ।

तबहि चंद कवि दौरि।[1]विप्र पद रह्यौ क्षिप्र गहिं ॥
छमि स्वामी अपराध। साध मुनि फुनि उहार कहि ॥
तुम सु षंड ब्रह्मंड। षंड नव तुम तप चल्लहि ॥
तुम भ्रंमन जीमूत। ऋषि जीवन प्रति पल्लहि ॥
केहरि भरंम हंम धूम किय। पायक बसिइय देव हुअ ॥
संकुचि नरिंद कंप्प डरपि। थरपि हथ्थ सिर सोम सुअ ॥
छं० ॥ १६४ ॥

## कविचंद का ऋषि से कहना कि यदि किसी से भूल में अपराध हो जाय तो माहात्मा लोग सहसा शाप नहीं देते।

पिय व्रत ध्रुव के वंस। भूप जयवंत सिकारं ॥
मूल मंडि प्रथि रोकि। बैठि दुरि जाल कटारं ॥
मुह अग्गै इक रिष्य। निकसि प्रावरि म्रग छालं ॥
भ्रम कुरंग हनि तक्कि। बान लगि उअर दुसालं ॥
क्रामंति जोग बल रष्षि तन। यप्पन मन तिन षिमा किय ॥
कविचंद कहत रिषि राज सुनि। पुनि कुपि आपन न्रपति दिय ॥
छं० ॥ १६५ ॥

कुंडलिया ॥ करि सनमान न सकिय दुज। सिव षिझि चक्र चलाय ॥
सिर लग्गं पुप्परि उछटि। जानु चिहुंटिय जाय ॥
जानु चिहुंटिय जाय। हाथ आकर्षंत छुट्टिन ॥
तीन कोडि हज्जार सठि। तीरथ करि अट्टन ॥
न्हावंत सरोवर दछिन महि। पातक पुट्टि विछुट्टि गय ॥
तीरथ कपाल मोचन तहां। नाम परठि परसन्न हुअ ॥
छं० ॥ १६६ ॥

( १ ) ए. कृ. को.-विप्र प्रदच्छि प्रहयौ गहि ”

## कवि का कहना कि हम स्वारथी और आप परमार्थी जीव हैं सो कृपा कर शाप के उद्धार का उपाय बतलाइए।

कवित्त ॥ तुम जप तप पर हेत। देत वपु रिषि दधीच परि ॥
तुम थुति श्रुति कहि सकै। तुम्ह पद चिन्ह धरै हरि ॥
हम स्वारथ लगि फिरहिं। इष्ट स्वारथ [१]आराधन ॥
हम संसारी जीव। हम सु अपराधह साधन ॥
नन सरन आन तुम सरन तजि। रष्षि सरन प्रथुराज हथु ॥
कट्टै सराप जा पुन्य करि। सो बताउ बरदान तिथु ॥ छं० ॥१६७॥

## ऋषि का कवि से नाम ग्राम पूछना और कवि का अपना और राजा का परिचय देना।

[२]चंद बदन्न मुन्निंद। कहै तुम नाम ठाम कहु ॥
तो मुष सबद रसाल। सुनत सुष होय हियै बहु ॥
तबहि भट्ट भाषंत। स्वामि मो नाम चंद कवि ॥
वह नरिंद प्रथिराज। लज्ज भरि रह्यौ देव दवि ॥
अब ह्वै क्रपाल प्रभु उच्चरहु। कछुक देउ बरदान फिरि ॥
अप्पौ नरिंद फिरि उद्धरहु। जिहि पारंगत [३]होहि तिरि ॥
छं० ॥ १६८ ॥

## ऋषि का संकुचित होकर राजा का प्रबोध करना और कहना कि शहाबुद्दीन तेरे हाथ से मारा जायगा।

चौपाई ॥ हौं बालक दुरवासा तनौ। सत्ति बात सब तोसौं भनौं ॥
इह न्रप तोहि दियौ बरदान। तेरे कर मरिहैं सुलतान ॥
छं० ॥ १६९ ॥
यों कहि रिषि अंतर सकुचान। मुह अग्गै न्रप मुष कुम्हिलान ॥

(१) ए. कृ. को.-आधारन। (२) को.-चंद वदन्न सुन्निंदं। मो.-चंद वचन्न मुनिंद।
(३) ए. कृ. को.-होत।

देषि दया उर भई मुनिंद। बोल्यौ रिजु दुज आउ नरिंद॥
छं० ॥ १७० ॥

## पुनः ऋषि बचन कि कवि राजा और शाह एक मुहूर्त में मरेंगे।

दूहा॥ न्रप चहुआन रु चंद कवि। अरु गोरी सुलतान॥
इक महूरत में मरैं। इह हम दिय बरदान॥ छं० ॥ १७१ ॥

## ऋषि के बचन सुन कर पृथ्वीराज का प्रसन्न होना।

आनंद्यौ प्रथिराज सुनि। निज मन करै विचार॥
देहन दह्म देवन रहै। साह सहित स्रत सार॥ छं० ॥ १७२ ॥

## पृथ्वीराज का अंतरप्रवोध ज्ञान।

कवित्त॥ देह न देवनि रहै। रहै नह देव दान बनि॥
देह न मुनि पैं रहै। देह नह रहै मान बनि॥
देह न नागन रहै। देह नह रहै नगन गन॥
देह न जच्छन रहै। देह नह रहै पुन्य जन॥
रहि है न देह गंध्रब्ब बर। गुभिझक सिद्ध अवद्धि बस॥
मन मझ्झ कहै चहुआन चिरु। रहै लैन हारे सु जस॥
छं० ॥ १७३ ॥

## पृथ्वीराज का ऋषि के पैरों पड़ना और ऋषि का राजा का सिर स्पर्श करना।

दूहा॥ यों विचारि प्रथिराज उर। लग्यौ रिष्षि कै पाय॥
मन में सकुचि मुनिंद कर। न्रप शिर लयौ उचाय॥ छं० ॥ १७४ ॥

## कविचन्द और मुनि का प्रश्नोत्तर।

### ( कवि वचन )

तब मुनिंद हौं चंद कवि। पूछत इह अंदेह॥
सकल कुटंबी लोक में। कोन सु सांचो नेह॥ १७५ ॥

## मुनि वचन।

पूरनसकल विलास रस। सरस पुच फल दान ॥
अंत होइ [1]सहगामिनी। नेह नारि को मानि॥ १७६ ॥

## कवि वचन।

गाथा ॥ किं तन त्रिभुवन सारं। किं तन मध्य सार रिष ईसं ॥
किं पुनर पिता मभ्भं। [2]सारं तत्त उत्तरं [3]देहं ॥ छं० ॥ १७७ ॥

## मुनि वचन।

नर तन नर पुरसारं। नर तन मद्धि सार तप सीयं ॥
सहि देही महि सारं। बाचं इक बुध [4]बद्दाई ॥ छं० ॥ १७८ ॥

## कवि वचन।

को दुज धरम कथेयं। को न्रप धरम परम संसारं ॥
किं बनिकं धन धरमं। किं धरमं सूद्र सहायं ॥छं०॥१७९ ॥

## मुनि वचन।

श्रुति पठनं दुज धरमं। भू भुज धम्म नित्त नित्तेयं ॥
दया सुधम्म बनिक्कं। सेवा ध्रम सुद्र सहाइ ॥ छं० ॥ १८० ॥

## कवि वचन।

दूहा ॥ कोन नगन अंबर छतें। को ढंको बिन चीर ॥
को हारै अंधौ फिरै। को जीते तजि तीर ॥ छं० ॥ १८१ ॥

## मुनि वचन।

जस हीनौ नागौ गिनहु। ढंक्यौ जग जसवान ॥
लंपट हारै लोह छन। त्रिय जीतै बिन बान ॥ छं० ॥ १८२ ॥

## कवि वचन।

राजरिद्धि [5]बाधंत क्यों। किहि भग राज बिलाय ॥
[6]भूषेउ न्रप छंडै कहा। कहा भूष मं पाय ॥ छं० ॥ १८३ ॥

---

(१) मो.-सहचारिनी। (२) मो.-नारं। (३) ए. कृ. को.-देहि।
(४) मो.-बरदाई। (५) ए.कृ.को.-मेटे कवन। (६) ए. कृ. को.-भूषौ।

## मुनि वचन।

रिषि पूजा लच्छी बढ़ै। रिषि अपमान बिलाय॥
रिषि बिभूति भूषै तजै। अनि वित भूषै षाइ॥ छं०॥ १८४॥

## कवि वचन।

किंहि मग कंटक विकट है। को मग सरल सुभाइ॥
किम मग चल्लियै रन दिन। किहि मग परै न पाई॥
छं०॥ १८५॥

## मुनि वचन।

हरि बिमुषै मग कंटकी। हरि मग स्सरल सुभाइ॥
हरि मारग निरभै सदा। अनि मग षोचौ षाइ॥ छं०॥ १८६॥

## कवि वचन।

को मैलौ पट ऊजलौ। को उज्जल पट मैल॥
कौ भूल्यौ मारग लगै। को भूल्यौ ही गैल॥ छं०॥ १८७॥

## मुनि वचन।

मन मैलौ मैलो वहै। मन उज्जल सु पवित्त॥
हरि विमुषे भूले फिरै। भूलि न हरि जिन चित्त॥ छं०॥ १८८॥

## कवि वचन।

भुगति मुगति किन निकट है। कातें दूरि दिषाइ॥
किन आवध जग जिति यहि। किन हारत जंगजाइ॥छं०॥१८९॥

## मुनि वचन।

समदरसी तें निकट है। भुगति मुगति भरपूर।
विषम दरस वा रन तें। सदा सरबदा दूरि॥ छं०॥ १९०॥
पर योमिनि परसै नहीं। ते जीते जग बीच॥
परत्रियं तक्कत रैन दिन। ते हारे जग नीच॥ छं०॥ १९१॥

सुजस बानि जग में जिये। कुजसी मृतक समान ॥
दाता जागै रैन दिन। सोवै सूम अजान ॥ छं० ॥ १९२ ॥

## कवि बचन।

को बैरागी ग्रेहही। को रागी बनवास ॥
को लूटै परलच्छि कों। काते लच्छि उदास ॥ छं० ॥ १९३ ॥

## मुनि बचन।

निरलोभी वैराग ग्रह। लोभी बनह्नं राग।
पटुभाषी परबत भषै। कटुभाषी तिय भाग ॥ छं० ॥ १९४ ॥

## कवि बचन।

किहि मुनि कोन अराधि है। जिनही ओसर देषि ॥
तुम बचननि सुष पाइयै। तुम दरसन सु विसेष ॥ छं० ॥ १९५ ॥

## मुनि वचन।

रूप कार कवि बैद बर। मरमी असिधर होइ ॥
बंदी जन धनवंत जड़। ए आराधी लोइ ॥ छं० ॥ १९६ ॥

## कविचंद और सब साथियों सहित राजा का डेरों को वापिस चलना।

इतनी सीष रिषीस की। सुनि पग बंदे चंद ॥
सम नरिंद असवार ह्वै। चलै दलै आनंद ॥ छं० ॥ १९७ ॥

सेन सुरन सहनाइ के। नहि निसान धुंकार ॥
चोधिन चमक चिराक की। नह बंदी हुंकार ॥ छं० ॥ १९८ ॥

बिन बेरां डेरां गयौ। भूपति भयौ उदास ॥
मरन हान सें मग्गई। सुनिय सकल रनिवास ॥ छं० ॥ १९९ ॥

डेरां लगै डरावना। रह्यौ कटक सब मौन ॥
नर नारीं नारी छतें। मनो प्रान किय गोन ॥ छं० ॥ २०० ॥

## उक्त शाप का संवाद पाकर रानी संयोगिता का दुःख करना।

चित्त चिंति संयोगिती । कोन कियौ मैं स्राप ॥
भोग समें संयोग में । कंतह भयौ सराप ॥ छं० ॥ २११ ॥

कवित्त ॥ कै मैं कट्टी [1]जाय । गाय चरती हक्कारी ॥
कै कांसौ पग छियौ । धूम मैं नागिनि मारी ॥
कै ज्योति विप्र परहर्‌यौ । कह्यौ नन बैन साखु कौ ॥
तेल लौंन वर हेम । चोर घर धर्‌यौ कासु को ॥
कीनी न कानि कै जेठ की । कै बोलत ज्वाब न दयौ ॥
बुल्ल्यौ सराप रिषि कंत कौं । सती हारु कें हर लयौ ॥
छं० ॥ २०२ ॥

## डेरों से चल कर दिल्ली आना और ब्राह्मण को दान देकर महलों में प्रवेश करना ।

दूहा ॥ दान दयौ रनिवास नें । अरु दिय दान नरेस ॥
अयनं उभय में नयन डर । कियनिय महल प्रवेस ॥छं०॥२०३॥
गैर महल राजन भयौ । सहित संजोइय वाम ॥
पोरिं न रष्यो पोरिया । जे इतबारी धाम ॥छं०॥ २०४ ॥

## इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेट चष श्राप नाम त्रिसठवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥६३॥

( १ ] मो.-नाय या माय ।

# धीरपुंडीरनाम प्रस्ताव ॥

## [ चौसठवां समय । ]

### संयोगिता व्याह के ढाई वर्ष बाद राजा पृथ्वीराज का अपनी सामंत मंडली के बल की परीक्षा करने की इच्छा करना।

दूहा ॥ सुष विलास संजोगि सम। विलसत नव नैव नित्त ॥
इक दिनं मन में उप्पनी। ऐ ऐ वित्त कवित्त ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ मास तीस दिन पंच। महिल संजोग राजबर ॥
जुद्ध घटै सामंत। बैर सु बिहीन सँबर पति ॥
सुभर सूर सामंत। उरह भुज पनबर जान्यो ॥
तीन मास तिय दिननि। तिनहि संसार सु मानौ ॥
तन तुंग तेझ वावन्न मन। तन तिहित्त उच्चौ न गिन ॥
कैमास बिना आमंत घटि। हुं जानत आभंग इन ॥ छं० ॥ २ ॥

### पृथ्वीराज का कन्नौज से भागकर आने पर पछतावा करना।

दूहा ॥ जुध अनेक सामंत करि। नहु भाग्गौ कहुं ठौर ॥
हम भज्जन कनवज्ज मति। अब दिष्यौ भर और ॥ छं० ॥ ३ ॥
कबही पिट्ठि न मे दई। अब लग्गी इह पौरि ॥
करौं परीछ्या सूर भर। जित्ती असुर बहोरि ॥ छं० ॥ ४ ॥

### बलिभद्ररराय का राजा से कहना कि सामंतों की परीक्षा के लिये जैतखंभ बनवाया जाय।

कवित्त ॥ तब कहै राव बलिभद्र। सत्त सामंत अभंगम ॥
इन बल घटै न राज। मंत घट्टै बर आगम ॥

एक सुबर सुर अंत। तीर बाहै बल मुक्कै।
पंष सबद संभरै। मद्द गजराजह चुक्कै॥
सामंत संगि प्रथिराज सुनि। जैत षंभ बर फेरियै॥
पारष्षि देषि चल वीर न्टप। जौंय संदेह न जोरियै॥छं०॥५॥

## निगमबोध ( तीर्थ ) स्थान पर जैतखंभ का बनवाया जाना निश्चय होना।

दूहा॥ सुनिय मंच प्रथिराज बर। मनि परधान सुमान॥
जैत षंभ मंडन सु मति। निगम बोध बर थान॥ छं०॥ ६॥
मुरिल्ल॥ जिन दिन बल सामंत सु घट्टै। जानि मन्नि प्रथिराज सु थट्टै॥
बाल दृद्ध जोबन बलकाजं। जैत षंभ चिंत्यौ प्रथिराजं॥ छं०॥७॥

## श्रावण मास वर्णन।

कवित्त॥ स्रावन भावन भवन। रवन रवनी मिलि राजहि॥
सविता जेम समुद्द। धरनि धारा हर साजहि॥
पच्छिम पवन प्रसारि। धार जल हर धर हरयौ॥
षाल नाल भरि ताल। भरत जलनिधि जल भरयौ॥
परि मीर सीर उठि चोर जिय। जीवन जाचक औल गन॥
नर नारि चतुर वर चित्त कौं। हरियालो सावन हरन॥छं०॥८॥

## नवदुर्गा में सामंतों के पूजा पाठ और उनके उत्साह का वर्णन।

ग्यारह से बावना। मास आसोज विपष्षिय॥
नव दुर्गें नव दीय। नवल सामंत न रष्षिय॥
नव सत्त नव दीह। महिष जोगिनि भिक्षारहि॥
हवन मंच दुज पढहि। पूजि दुर्गा जग्गारहि॥
उच्छह उतंग तिहि राइ पर। जुरन तेग बंधहि न्टपति॥
संपदा चिति चहुआन की। प्रथीराज तेजह तपति॥छं०॥ ९॥

## पृथ्वीराज का सब सामंतों को जैत खंभ के निर्माण और अपनी आज्ञा की सूचना देना ।

तट्टह अट्टह अट्ट । अठ अंगदीह सु मंडिय ॥
अट्ठ अट्ट प्रमान । सहर सिंगारि सिकंडिय ॥
आहुट्ठ सै दून । राज अग्या भर मंडिय ॥
जैत षंभ जैतान । जोर जुद्धा जो षंडिय ॥
आनंद तेज अग्या सु भर । भूपर भूप भुअप्पतिय ॥
मानिक राइ कुल उद्धरन । प्रथीराज छत्रपतिय ॥ छं० ॥ १० ॥

## पृथ्वीराज का जैत खंभ बनवाए जाने की आज्ञा देना ।

एक समैं प्रथिराज । बत्त जंपिय भर सारनि ॥
अष्ट धात करि षंम । सिंगि कट्टै बल पारन ॥
तिहि समान नहि बीर । विजय दसमी इह किज्जै ॥
अप्प अप्प बल तोकि । इष्टनिय जाप जपिज्जै ॥
सुनि सूर सजल आनंद मन । पुनित महल राजन उग्यौ ॥
सुनि धरि जाइ जालंध दर । प्रसन करन कारन हयौ ॥
छं० ॥ ११ ॥

## चंद पुंडीर के पुत्र धीर पुंडीर का जालंधरी देवी की उपासना करना ।

सगति भोग संसार । सगति कर जोग जुगति जग ॥
सगति मुगति बर दैन । सगति आधार नाग नग ॥
सगति महा सुख करन । सगति बिन सुष्य न पावै ॥
संगति राज निज काज । सगति नर सुर जय लावै ॥
इह जानि धीर मन ध्यान धरि । सगति उपास बिचार वर ॥
आनंद कंद नृप चंद सुत्र । धीर जाप लीनौ सुधर ॥ छं० ॥ १२ ॥
सुभ असोज रवि मूल । सिद्धि जोगह सुष कारिय ॥
दुर्गा साहि यापनी । धीर आराधि विचारिय ॥

धन सुलगीन मुष गरुअ। धीर जालपा उपासै ॥
ग्रह सुथान मति मान। कनक दुति षोड़स भासै ॥
एकंग मंत सद्दै सुमन। भूमि सयन सुद्दह 'बसन ॥
गो दुद्ध हार बर इक्कलै। व्रत उचार बोलन रसन ॥छं०॥१३॥

## पूजन विधि, देवी का प्रसन्न होना और धीर पुंडीर का वर मांगना।

पद्धरी ॥ सहि याम छाय वासं सुसुभ्र। बासना उग्र कर पूर उभ्र ॥
अन्यन प्रवेस तिन ग्रह पवित्त। कारज्ज कज्ज हैं आइ मित्त ॥
॥ छं० ॥ १४ ॥

आसनह हेम चयकोन कुंड। कर सेत माल जंपि उंच तुंड ॥
परिधान वस्त्र सारत्त रज्जि। अंबरह सेत उप्पर सु सज्जि ॥
छं० ॥ १५ ॥

आसन्न एज अग्गैं अनूप। स रजित तथ्थ जालंध रूप ॥
तस अग्ग संग सेरह बतीस। धज धोम पग्ग अग्गै सु कीस ॥
छं० ॥ १६ ॥

सुध्यान जाप दस सहस होम। धरि ध्यान होम जज्जिय सु कोम ॥
धरि हीय ध्यान जालंध देवि। मन वच्च क्रम्म चिंतिय सु तेव ॥
छं० ॥ १७ ॥

चय पष्प वीच भय निसा जाम। आदिष्ट देवि बुल्लिय सु ताम ॥
मंगि मंगि मंगि नर बीर सत्ति। इछंत काज जो मुझझ मत्ति ॥
छं० ॥ १८ ॥

बुल्ल्यौ सु बीर जालंध माइ। सु प्रसन्न देवि जो मुझझ भाइ ॥
बर एक सुद्ध अप्पहु सु अम्ह। फुट्टैव संग मो जैत षंभ ॥
छं० ॥ १९ ॥

जंपै सु देवि रे धीर धीर। फुट्टैव जु षंभ मो सक्ति वीर ॥
राजन सु तोहि अप्पै पसाव। ग्रामह सु थान आदर सु भाव ॥
छं० ॥ २० ॥

(१) ए. कृ.-सरन।

आये सु जात मुझ्झह सु रंभ । फुट्टै सु संग तौ जैत षंभ ॥
चिंतै सु चिंत मुझ जहां चित्त । जहं जहां संकट तो पास मंच ॥
छं० ॥ २१ ॥

जंपै सु धीर जालंध मात । फुट्टै सु षंभ आंउ सु जात ॥
फुट्टै जु संग मो सकति तिष्य । भुंजों सु अन्न तो दरस दिष्यि॥
छं० ॥ २२ ॥

बरदान दियौ देवी सु धीर । नीसान प्रान बज्जै सु भीर ॥
संमरें धीर देवी सबद्द । छुट्टै सु दुष्य नर वै मरद्द ॥ छं०॥ २३ ॥

## देवी का बरदान ।

कवित्त ॥ हेम दंडि सिर मंडि । मंच द्रिग आनि मिलाइय ॥
धूप दीप साषा सु गंध । जंच अरु ध्यान जु पाइय ॥
नारिकेल फल सुफल । महिष पारंभ पंच बिय ॥
बिनै विद्धि सारंत । करिय पूजा अनंद जिय ॥
बर धीर मिली मग्गी सुबर । प्रसन उमा परतष्य हुअ ॥
चर चित्त बीच करहि न कछू । षंभ फोरि जैपत्त तुअ॥छं०॥२४॥

## धीर पुंडीर का कुमारी कुमारियों को भोजन करा कर उपारन करना ।

दूहा ॥ कुम्मारी कुम्मार सहु । बोलि सु भोजन दीन ॥
अनंत विप्र भोजन विविध । धीर सु पारन कीन ॥ छं० ॥ २५ ॥
अति आनंद सु धीर किय । भयौ सूर रस मास ॥
अनत विप्र भुंजे भगति । दिय सबद्द षिन तास ॥ छं० ॥ २६ ॥

## जैतखंभ का वर्णन और सामंतों का नित्य प्रति अभ्यास करना ।

कवित्त ॥ जैत षंभ मंडयौ । स्वामि सामंत परष्यन ॥
अष्ट धात कर अष्ट । रेष गज अष्ट सु रष्यन ॥

अष्ट मुष्टि चा रुष्टि। वाहि कट्टै जु संगि बर ॥
इष्ट देव सत सील। संच आभंग रंग भर ॥
तारुन्न तुंग सह सत्त भर। इस अभ्यास दिन प्रति करहि ॥
इक मुट्ठि दु मुट्ठि ति मुट्ठि लगि। किहुन सार दुअ अंग सरहि॥
छं० ॥ २७ ॥

## धीर का जैतखंभ भेदने के लिये जाना।

चकित चित्त चहुआन। सूर सामंत न सुझ्झहि ॥
नर पष्षर भर भिरन। षंभ सों षिष्षि षिष्षि झझझहि ॥
तीन पष्ष दिन पंच। बीर नीसानन बज्जिय ॥
सबर बैर सुरतान। ज्ञाहि सम्मुह करि संज्जिय ॥
पुंडीरराय चंदह तनौ। धीर नांउ बै अंकुरिय ॥
रन सिंह कंध थष्परि तरकि। हेम तुल्य लिन्नौ तुरिय ॥छं०॥२८॥

## धीर पुंडीर की अवस्था और बल का वर्णन।

नव बिय बरष प्रधान। तुंग लच्छिन उतंग तन ॥
चल्यौ सिंह सामंत। बीर पुंडीर धीर घन ॥
ताजी तुंग उतंग। बैस बीय पय अढारै ॥
मीरन रत्त सु गत्त। पियै जल अभ्भ क चारै ॥
बर चंद जंपि चंदह तनौ। विभर मेछ बल अंकुरिय ॥
तन पष्षि परष्षन न्रिपति बल। चढि तुरंग धंधरि परिय ॥
छं० ॥ २९ ॥

## अश्व वर्णन।

विराज ॥ लियौ सेत ताजी, सुधा जीति साजी। तुला हेम तोलं, महालीन मोलं॥
छं० ॥ ३० ॥
अनूपं एराकी, सहै ना सुधाकी। दुअं गात उच्चं, सरूपं सकुच्चं ॥
छं० ॥ ३१ ॥
षड़ै षाल नालं, तगै लंघि तालं। भरै दान भारी, कहां पंषि कारी॥
छं० ॥ ३२ ॥

## धीर का खंभ के पास पहुंचना ।

दूहा ॥ ध्यान उमा करि सुमंन धरि । धीर बीर मन लाइ ॥
जैत षंभ फोरन सु बर । भो जालंधर आइ ॥ छं० ॥ ३३ ॥

## पृथ्वीराज का ससैन्य जैतखंभ पर जाना और धीर का आना ।

कवित्त ॥ विहँसि चल्यौ चहुआन । सूर सह सेन बुलायौ ॥
जैत षंभ रोपयौ । लोह मन तीस मिलायौ ॥
भयौ राइ आयेस । कुंअर सब बिंझौ पेलहु ॥
सेंधि तीर तरवार । संग सरवर कर मेलहु ॥
चिहटै न चोट दुअ अंगुरिय । उंहित संग मध्यै धरिय ॥
अप्पौ सुराइ तिहिं अप्प करि । भनहु सूर सह अहि उहिय ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ दिवस अट्ठ पुज्जिय सकति । नवल नवम्मिय दीह ॥
सिलहि सुरंग सु मंडि किय । चल्यौ तुरंगम सीह ॥ छं० ॥ ३५ ॥

भुजंगी ॥ चल्यौ सिंह सामंत पुंडीर भारी । धरै कंध सोहै सकत्ती करारी ॥
जुरै जूह कालं ग्रसै सार सारै । पिष्षै षंभ तेजी दुहूं अंग डारै ॥
छं० ॥ ३६ ॥

रुरी भेरि भंकार नीसान घाई । उठी वेद विप्रान विप्रान आई ॥
तपै तेज वाही चिभागी ततारी । उनें धात में धात कड्ढी निनारी ॥
छं० ॥ ३७ ॥

मिटै रेन रायां दिपी अंग चंडी । तुला सौर दंडी मनो धर्म मंठी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

## पृथ्वीराज का आज्ञा देना और धीर का जैत खंभ भेदना ।

कवित्त ॥ हो रावत्त मंडली । कोरि मच्छर मन मंडहु ॥
सो तुरंग तन षिस्यौ । संग बाहिर गहि कढ्ढहु ॥

बंस कुली छत्तीस। करहु बल जावल भावै॥
संगि न टारी टरै। जंतु घिन अङ्ग डुलावै॥
अप्पौ तुरंग चहुआन तब। बिहसि धीर पुंडीर लिय॥
उप्परिय जैत पंभह सहित। तब पसाव प्रथिराज किय॥
छं०॥ ३९॥

## पृथ्वीराज का धीर को सिरोपाव जागीर आदि देना।

भुजंगी॥ कियौ राय परसाद पुंडीर जोटं। मही.मंभु काम जुहिं सारकोटं॥
दिये पंच हज्जार ग्रामं सु थानं। भंडा माहि वैरष्य पीलं निसानं॥
छं०॥ ४०॥
रष्षतं बष्षतं तुरंतं उचायौ। अप्पौ सब्ब सामंत पुंडीर जागौ॥
तबै बोल बोले सु उट्ठै अचाए। कहै चाय चहुआन सों बोल चाए॥
छं०॥ ४१॥
अबै मरन कै करन कै करहिं साई। बाधन कै गहन कै सुरतान घाई॥
छं०॥ ४२॥

## राजा का धीर पर अपनी पैज प्रगट करना।

कवित्त॥ च्यारि वचन चहुआन। दिए बर धीए अचाये॥
मरन काम चहुआन। करन अरि हरन बताये॥
गहे धीर सुरतान। हथ्थ अप्पन चहुआनं॥
जोध कीस धोषंत। करैं सु बिहान प्रमानं॥
जो धीर राइ इम उच्चरै। कास साम साक्रत करै॥
प्रथिराज काय भंजन भिरन। धर भज्जत सम्हौ मरै॥ छं०॥४३॥

## धीर का मस्तक नवा कर राजाज्ञा को स्वीकार करना।

आगें धीर सधीर। हथ्थ चहुआन मथ्थ दिय॥
आगें सूर सहूर। ताप उतराध तेज लिय॥
आगें बर कैलास। ग्रहै पीनाक सु साजे॥
आगें कंचन तेज। धरे नग तेज विराजे॥

आगें सु धीर पुंडीर बर। अरू स्वामि हथ्थ वर मथ्थ दिय ॥
सामंत जैत चामंड बर। मिच हथ्थ दिस सयन किय ॥
छं० ॥ ४४ ॥

## चामंडराय का कहना कि धीर क्यों लड़कपन में आकर व्यर्थ की प्रतिज्ञा करते हो, दोनों पक्ष का बल तो तौलो।

हंसि बोले चामंड। धीर सुनि बात हमारी ॥
पातिसाह दल विषम। तुरी अगनित है भारी ॥
घर बैठे अप्पनै। बोल तुम बड्डे बोलहु ॥
मेर भरन कहो बथ्थ। सिंघ सम कुंजर तोलहु ॥
रे सुनहि सूर पुंडीर कुल। एतो झूट्ठ न तुम कहहु ॥
जिहि सात फेर हस्ती फिरहि। किम सु साहि जीवत गहहु ॥
छं० ॥ ४५ ॥

दूहा ॥ घर सूरा मठ पंडिया। गाम गमारां गोठि ॥
पंच मझ्झ बोलत बयन। धूज बिछुट्टिय होठ ॥ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

गाथा ॥ अलसायं जे न सा पुरिषेण। जे अप्परास मुचरिया ॥
ते पथ्थर टंकि उकीरी अन्न। कबही नह अनहा हुंती ॥
छं० ॥ ४७ ॥

रास हरडियं कु नरिंद भासियं। इयर लोय पड़ि वन्नं ॥
पुव्व उठानय गुंहअं। पछालहु अंचलहु अंचं ॥ छं० ॥ ४८ ॥

सुर सिरि सूलं बड़ बीज पल्लवं। सुअन लोइ पड़ि वन्नं ॥
पुव्व ठानय लहुअं। पछा गरुअंच गरुअंचं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

## धीर का कहना कि मैंने जो कहा है वही करूंगा।

कवित्त ॥ हौं पुंडीर नरेस। हौं सु झुझ्झार सबर बर ॥
हौं सुत चंदह तनौ। ढिल्लि दल देहुं चिविध घर ॥
मोहि इष्ट बल सकति। मोहि बानै बर सज्जित ॥
मो सम अवर न बीर। साहि उप्पर दल गज्जित ॥

हौं सुनौ सच, दाहन दहन। हौं सुति नहिं तिन बर गनौ॥
बर बीर धीर इम उच्चरै। गहुं साहिब हसतौ हनौ॥छं०॥५०॥

## धीर की बीर प्रतिज्ञा की चरचा का सर्वत्र फैल जाना।

दूहा॥ बढि अवाज ढिल्लिय नगर। धीर ग्रहन कह्यौ साहि॥
हँसिहि सूर सामंत ए। कुटिल दिष्ट मुष चाहि॥ छं०॥५१॥

## एक महीने पांच दिन में यह समाचार उडता हुआ शहाबुद्दीन के कान तक पहुँचा।

कवित्त॥ मास एक दिन पंच। बत्त दिसि विदिसि न हुअ॥
चंद पुत्त कौ चाव। पेषि प्रगट्यौ जस धूअं॥
दिसि दष्षन पुब्बाह। रहस उत्तर पच्छाहं॥
गल्ह वान गल्हा करंत। चिहु चक्क सवाहं॥
अदभुत्त बत्त संसार सुनि। पुंडी राइ हरट्टिया॥
गज्जनै साहि साहाब दर। मुष मुष कित्ति प्रगट्टिया॥ छं०॥५२॥
मंगि दीय बर मात। राज प्रथिराज महाभर॥
जैत षंभ जित्तनह। साहि बंधन आनन धर॥
तब तुट्टिय चवसट्ठि। दियौ बल षंभह फोड़न॥
अरु जु साहि बंधनह। ताहि बर बंक पधीरन॥
इह कहत मात दिन्नौ सु बच। सुनत साह अचरिज्ज हुअ॥
पिष्षह सु बीर बल कारनै। जैत षंभ आरंभ किय॥छं०॥५३॥
दूहा॥ बज्या नाम पुंडीर तुअ। लज्जा दान सु षग्ग॥
नित्त निहाई बत्तरी। कित्ति दुहाई मग्ग॥ छं४॥५४॥

## जैत प्रमार और चामंडराय के मन में धीर कीं ओर से डर पैदा होना।

पद्धरी॥ दुहुं मग्ग नाम पुंडीर धीर। नीसान प्रात बज्जंत धीर॥
पामार जैंत चावंड राय। तिष्ठान राग खग्गेति घाय॥छं०॥५५॥

कल मली चित्त बहु भंति आइ।* * *
दीवान मान आदर अदब्ब। षिन षिन सुताय लग्गै सु गब्ब॥
छं० ॥ ५६ ॥

बलिभद्र बीर जामानि जद्द। षीचीय रांव षिष्फि कहिय सद्द॥
बग्गरिय राव देवाधि देव। आजानबाह बोलंत मेव॥
छं० ॥ ५७ ॥

रबव्व ग्राम गुज्जरी तेह। लोहान बत्त पुंडीर छेह॥
उपगार चंद चिंत्यौ सु तभ्भ। रष्षयौ पूर चालुक्क सभंभ॥
छं० ॥ ५८ ॥

तापंत राज सज्जी न बज्जि। पल्हैत तोन तम कवन कज्ज॥
घटि बटित और गावार रंग। हर गाम धाम देसा दुरंग॥
छं० ॥ ५९ ॥

ता मुनिय सत्त उद्दंत भ्रित्त। जगि जलनि जानि सिंच्यौ सु घ्रत्त॥
गांमौ गमार पुंडीर सूर। तिहि जाइ तुट्टि सुरतान पूर॥
छं० ॥ ६० ॥

दादुरति कोट जिहि भार सद्द। पुज्जै न कोइ कोकिलति बद्द॥
आचंरन सिंध जंबुक कुलाइ। भज्जैत प्रात मिलि सुगह ताय॥
छं० ॥ ६१ ॥

बंबर विरह बामा सु पानि। बंधे सु कोन बर सूर तान॥
उच्चरे बीर चामंड राय। जिन वीर्य बंस सामंत पाइ॥
छं० ॥ ६२ ॥

हम लज्जी सूर सामंत भार। प्रथिराज राज बल उद्ध सार॥
अपराध बंध धरि धात षंभ। जानै न जुद्ध सुरतान गिंभ॥
छं० ॥ ६३ ॥

प्रथिराज ताहि अप्पै मुलक्क। हिंसार कोट पट्टन पलक्कि॥
गज बाज बीर बैरष्ष सेत। नीसान मेघ रन पील नेत॥
छं० ॥ ६४ ॥

बरजै न कोन सामंत राइ। इहि मुष्ष अप्प रहनो न जाइ॥

सुभ्भ्झै न॰काम कोई प्रमान। चहुआन पचान्यौ सकट स्वान॥
छं॰॥ ६५॥

## अरदास कायस्थ का शहाबुद्दीन को धीर की प्रतिज्ञा का सारा हाल लिखकर सूचना देना कि धीर सपरिवार जालंधरी देवी की पूजा करने जायगा।

कवित्त॥ लिखि अरदास जुगत्ति। जैत सुरतान सुपट्टिय॥
कोतूहल गूजर गमार। मुखही मुख ठट्टिय॥
नाना ही गोचर गियान। पांवार पुंडीरां॥
राज छज्जि रवि देउ। मूह सज्जल सम्मीरां॥
मझ्झांह गुज्ज अंतर कियौ। बोलां हीरा बत्तियां॥
सांइनौ संग बंछै मरन। सोहै साहस छत्तियां॥ छं॰॥ ६६॥

बचनिका॥ बज मौंम हमंद ईन। सुलतान साहाब दीन॥
तुरकमां ताज। गज्जने बीर बाज॥
अरदास जैत काज। लिखी बंदगी साज॥
तिन उनह कौ गुनाह। डिभूरू बिरद बाह॥
बहुत कुल पंचना। देवी दिवाना॥
दरवार हिंदवाना। गज्जने साहिपति साहिपनाह॥
छं॰॥ ६७॥

कवित्त॥ इति अरदास लष दई। जैत गौरी सुबिहानं॥
ग्रब्ब गमार पुंडीरी। सीस लग्गी असमानं॥
अवसि मास आसोज। दैव अष्टमि गुरवारं।
पूजि मिसह जालंधि। संग सब्बै परिवारं॥
इह घात साहि सुबिहान कों। नन्दै सुष बड्डिय कही॥
बरजंक अचानक रचि बल। तबहि साह से मुष गही॥छं॰॥६८॥

## आश्विन की नौ दुर्गा में धीर का देवी पूजने जाना।

गरजि मेघ निंबरिय। सरद सरवरिय अहन्निय॥
जल थल न्निम्मल निज। अकास बह वास अवन्निय॥

हंस बंस सारस सबद्द । कंकेलि कुकंदे ॥
सुलित सरोवर मन । म्रजाद अम्रत कर चंदे ॥
रति नइय नौमि जुद्दह सुदिय । जल जलह पूज्जन बिहंसि ॥
सिद्धा न सिद्ध करि चंद सुअ । अंबह रिपु पारस परसि ॥
छं० ॥ ६९ ॥

## धीर का व्रत से पैदल चलना ।

दूहा ॥ सूर तेज अति सरद कौ । आगम चढ़े विराज ॥
ज्वालंधर वर परसने । बोल पुबंतर काज ॥ छं० ॥ ७० ॥

कबित्त ॥ चल्ल्यौ लै निज भत्त । जात ज्वालप्प जलप्पियं ॥
पाय चलत उँविहानं । पान भोनह तजि तप्पिय ॥
धीर हार इक बार । भूमि संथाह सधारिय ॥
मौंन धारि जप सार । धूप दीपह पुज्जारिय ॥
सामंत अमंतन जानि कै । सकै न दुष टारन दइय ॥
इह दुष्ट कष्ट निज सेव कहुं । जानि जननि प्रग्गट भइय ॥छं०॥७१॥

## जालंधरी देवी का धीर को स्वप्न में सूचना देना कि शाह के भेजे हुए गुप्त दूत तुझे पकड़ने आरहे हैं ।

निसा मद्धि मातंग । बोल समधीर सु बत्तिय ॥
चौंडराय पामार । साहि संमुह लिषि पत्तिय ॥
अट्ठ सहस गष्वरी । धीर पकरन तो पठ्ठिय ॥
गुपत तेग्ग गहि गोप । भेष कप्पर करि लठ्ठिय ॥
पय पय सु तुभ्भ्क संकट हरौं । बोल बोल सांनिध करौं ॥
इम कहत देवि अप्रछन्न हो । तो प्रयज भा सम धरौं ॥छं०॥७२॥

## सप्तमी शुक्रवार को धीर का जलंधरी देवी के स्थान पर पहुंच कर पूजन और दान करना ।

दिन सुक्कह सत्तमिय । जाय जालंधर पत्तिय ॥
दान न्हान परमानं । थान थानह करि अत्तिय ॥

तहं हिंदू बर मुसलमान। लष्य विप्र सुश्रावहि॥
जवनिक कुल छत्तौ। कुलाल षोड़स मिलि धावहि॥
जानै न कोइ नर भर चपति। प्रवत लग्गि पारस पर्यौ॥
कोटन सु कोट भंडार भरि। घन सु द्रव्य हाहुलि भर्यौ॥
छं०॥ ७३॥

## जैत प्रमार और हाडा हम्मीर की शाह प्रति सूचना।

दूहा॥ तब लिष्यौ कपट कग्गर करइ। जैत पमार हंमीर॥
बोल्यौ बोल अचग्गरौ। तिन पकरायौ धीर॥ छं०॥ ७४॥
गहिय पानिं कहि साहि हम। कोइ भर मीर मलिक॥
धीरहि गहि आनै निजरि। साहब लह सो सक॥ छं०॥ ७५॥

## शाह के धीर के पकड़ लाने का बीडा रखना और गष्षर लोगों का बीड़ा उठाना।

कवित्त॥ दिए पान सुरतान। लिए आरिष्य हथ्थ धरि॥
कहै साहि साहाब। जियत ल्यावहु सु बंधि कर॥
अह सहस गष्षरी। नेग गहि चढ़ तुरत्तह॥
संक न मानौ जाइ। धीर बैठौ बिन मत्तह॥
संदेस कहौ पुडीर सों। चलि रावत नहिं संक जरि॥
तब बेढलेउ चिहु पासु तें। लै आवहु बेसास करि॥
छं०॥ ७६॥

## उक्त गष्षरों का योगी के भेष में जालंधरी देवी के स्थान पर धीर के पास जाना।

तक्यौ साहि गज्जनै। धीर जालंधर जत्तह॥
सहस अट्ठ गष्षरिय। भेष करि कप्पर रत्तह॥
गहि आनौ छल बल। पुंडीर राइ चंद कुम्मारह॥
कर कगार लिखदिये। भेद राजैत पमारह॥

तारन्न तुंग साधक सकल । मनों मोन मूरत रचिय ॥
गुन गुपत हथ्थ गुपती धरिय । भुगति मंगि जोगिय हँसिय ॥
छं० ॥ ७७ ॥

## छद्म वेषधारी योगियों का धीर से भिक्षा मांगना।

दूहा ॥ धीर निकट ठाढे भये । कपट हेत सहरूप ॥
जोरि हथ्थ तिन्न विन्नयो । भुगति देहि हम भूप ॥ छं० ७८ ॥

## गष्षर लोगों का धीर का घर का गजनी लेचलना ।

कवित्त ॥ सिंध बिहथ्थें आव । नाव नगलि उत्तरिय ॥
आनि तथ्थ गजराज । ढाल मभ्भें बैसारिय ॥
अट्ठ सहस गष्षरी । अट्ठ दिसि सेवा सारत ॥
इम आवै भर धीर । रथ्थ बैठौ जनु पारथ ॥
प्रजलोक देह देहह दुनी । दिष्षन भर धर उंमही ॥
जानै कि इन्द्र मुख विष्षनह । उलटि मोर नग उंमही ॥
छं० ॥ ७९ ॥

## धीर का गजनी पहुंचना और नगर निवासियों का कौतुक से उसे देखना।

पद्धरी ॥ आरोहि गज्ज पुंडीर धीर । लै चलै घेरि गष्षर गहीर ॥
गष्षरी सहस अष्टह प्रमान । नाषिच बिंटि सविता समान ॥
छं० ॥ ८० ॥
सुक्के विलहि चिन्हाव धाय । उत्तर्यौ सिंध जोजन सवाय ॥
सब लोक सिंध मंडल जु रेस । दिष्षनह धीर वीरत नरेस ॥
छं० ॥ ८१ ॥
द्वादसह भान सुष प्रगटि जोति । निय उंच थान बहु प्रात होत ॥
कै कहै साम्हि हनि है कंधानि । दै है सु प्रगट कै कहै दान ॥
छं० ॥ ८२ ॥

इन भंतिं सहर गज्जन सपत्त। बंदियन विरद आसिष्य दत्त ॥
संकरह हेम तोलह चिसत्त। निय पाय कढ़ि किय धीर दत्त ॥
छं० ॥ ८३ ॥

जसु दान डक्कि गज्जन सु देस। इम पत्त हार असुरह नरेस ॥
उम्मरा मीर सब मिले आय। दिष्षनह धीर पैजह पराइ ॥
छं० ॥ ८४ ॥

जालीन मध्य देषै हुरम्म। दिषि रूप धीर सुक्कै सरम्म ॥
पुंडीर आइ दरबार चाहि। गज्जनौ लोक कौतिग नमाइ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

## राजद्वार पर दर्शकों की भारी भीड़ होना और गष्षर सरदार का शाह से धीर की गिरफ्तारी का हाल वर्णन करना।

कवित्त ॥ गज्जन वासी लोक। केक पर दिष्षन आइय ॥
चंद पुत्त मुष चंद। कुंद सष जानि सधाइय ॥
मीर मल्लिक उंमरा। भीर मत्ती दरबारह ॥
ठाम न लभ्भै कोइ। ताहि पिष्षन भर भारह ॥
अचरिज्ज भयौ सब सहर में। जब आयौ दरबार क्रम ॥
पुच्छै जु साहि जब धीर सो। बै विरद लिन्ना विषम ॥ छं० ॥ ८६ ॥

भुगति देन कहि भूप। इच्छ कप्परी जु तुम कहु ॥
निसा आदि एक लौ। पूजि मूरति सब तुम कहु ॥
बोलि मंगि सहु सिद्ध। फेरि दीनी हुंकारौ ॥
ठाम ठाम संग्रहिय। फेरि धरियौ धुत्तारौ ॥
जो जनवि पंच उग्यौ अरक। तपत सिंधु सिंधि उत्तरिय ॥
द्वादसी दिवस द्वादस सकल। साहि धीर इक्कत करिय ॥ छं० ॥ ८७ ॥

## धीर के पकड़े जाने का समाचार चारों ओर फैलना। धीर के षवास "वैजल" का अधीर होकर अन्न जल छोड़ देना॥

कुंडलिया ॥ दह दह कोह दहत्त बिन। फिरि फट्टी पुक्कार ॥
बर षवास लंघन करिय। पानी पन्न अहार ॥

पानी पन्न अहार। धीर सुरतान थान गय ॥
जाम देव गष्परह। भइय आवाज साद भय ॥
मिलिय षलक दरबार। दुनिम लग्गी दर सोहं ॥
गो सु पुरह गज्जनै। किरिति फट्टी दह कोहं ॥ ८८ ॥

## बैजल षवास का स्वप्न देखना।

कवित्त ॥ घालि रष्षौ पुंडीर। धीर धीरत्ति न रुष्षं ॥
षग. षोलंत विहथ्थ। सिद्ध चोवद्दिसि दिष्षं ॥
जाम देव गष्षह नरिंद। मंच छत्त सिर पटि नष्षं ॥
तत्तारह पुंडीर। मेछ सिरदार न भष्षं ॥
उष्पारि लियौ सुरतान पै। धीर न धीरत्तवं डुलं ॥
मनि हाम चंद चंदह तनौ। छल बिचारि षग्गान षुलं ॥
छं० ॥ ८९ ॥

गहत धीर षावास। मंत चरननि अरि रुद्धी ॥
तीन सहस बिच एक। सीस गुपती आलुद्धी ॥
निसा मद्धि चमचमी। रोस भारी तन भग्गौ ॥
कूट बंज्र भष लुटि। धाय सह परवत लग्गौ ॥
सत अड्ड कोस बाहत सुबर। फिरि पच्छी आइय उकति ॥
षावास चंद पुंडीर रषि। प्रात उड्ग्गन तजहि भति ॥ छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ बिषय वास बेजल सुबर। तन सोइ दिषि भय भार ॥
दिवि नरिंद लंघन करै। पामी फान अधार ॥
छं० ॥ ९१ ॥

हम सह्स्स ढिल्लिय सहर। गहन धीर सुरतान ॥
जट्ट सुपन विपरीत तय। बडव बंछ कंधान ॥ छं० ॥ ९२ ॥

## तत्तारखां का धीर से कहना कि तूने यह क्या प्रतिज्ञा की।

कवित्त ॥ मिल्लि षलक षान पट्टान। साह सभा भरि मंडे ॥
तहं सुधीर पुंडीर। आय उत्तर कर छंडे ॥
वे अदान नादान। धात्त भजै धष लग्गौ ॥
जंग रंग चह आन। देस देस घन लग्गौ ॥

गामी गमार पुंडीर कुल। बाप भलेरा पुच्च बट॥
सुरतान षान दिट्ठान दिट्ठ। कित कुरान चिंतै 'सुचट॥छं०॥९३॥

## शाह का सुपना।

सुनौ षान तत्तार। साह लह्यौ सुपनौ निसि॥
हैं गै निधि चतुरंग। चिंति राजस तामस विधि॥
बर बंधे गजपति नरिंद। बोल बड्डे उच्चारें॥
वंह वह.करि उच्चरिय। षग्ग अरियन सिर झारे॥
बिपरीत सुपन बानिक्क हुअ। कर बंधे न्टप बत्त बर॥
सोचयौ सुपन ऋहि डिंभरू। बर बंधत छुट्टे बि भर॥
छं०॥९४॥

## दर्शकों का बिचारना कि देखें हिन्दू कैदी को शाह क्या सजा देता है।

हरमहार सिंगार। गोष जाली दिसि जहै॥
पलक षान उम्महिय। साहि हिंदू दुअ बद्दे॥
कोतूहल आलम उदार। दल बद्दल उन्ने॥
हनै कि छंडै साहि। चढी चिंता चित दूने॥
करतार जाहि रष्षे करां। ताहि रोम बड्डै कवन॥
रहिमान राम बट्टै कछू। ताहि निमष रष्षै कवन॥ छं०॥९५॥

## कवि की उक्ति कि मारनेहारे से रखनेवाला बड़ा है।

दूहा॥ मारै जाहि रमा सु बर। तिनह न रष्षै कोइ॥
रष्षनहारो राम जिन। मारि न सक्कै कोइ॥छं०॥९६॥

## एक आपत्तिग्रस्त हिरन की कथा।

कवित्त॥ एन एक आरन्य। चरन पारद्धिय दिष्षिय॥
'ता पछ औसर पाई। फंद पारद्धिय पंचिय॥

(१) ए. को. सुचंड।

दिस दच्छिन कूकरन। करत घुर घुरा सिंह सम॥
उत्तर दिसा असाध। दंग लग्गौ करार दम॥
चिहु दिसा रुक्कि आरिष्ट चव। कहां जान पावै हिरन॥
तिहि वार एण इम उच्चर्‌यौ। मो गुपाल रष्षहु सरन॥ छं०॥९७॥

अनल उट्ठि आघात। अनल उड़ि फंद दहे तिन॥
तब वलाह बरसंत। बुझ्यौ दावानल सो वन॥
स्वान होत सनमुष्ष। धये जंबुक लगि पुट्ठं॥
जात देषि मृगराज। रीस करि पारधि रुट्ठं॥
तानंत धनुष गुन तुट्टयौ। चल्यौ एन बिन संक मन॥
करुना निधान रष्षन करहि। ताहि मारि सक्कै कवन॥ छं०॥९८॥

दूहा॥ रष्षन हारो राम जिन करि राषै इहि भांति॥
वधिक सिचाना बधि रषै। पारापति दंपत्ति॥
छं०॥ ९९॥

## कवि का कहना कि मरने वाले को कोई बचा नहीं सकता और इस विषय पर जयद्रथ की मृत्यु का प्रमाण।

भुजंगी॥ नवं दून रष्षं जयं जैतरथ्यं। तहां अप्प अग्गाया धरं तंत रथ्यं।
नवं दून षोहं निषंडी अचीनी। मिले पंड कुरषेत जैजरथ रंनी॥
छं॥ १००॥

करी पैज पारथ्थ जैजरथ बंधं। तिनं रष्षनं जाय जैजरथ सिंधं॥
कियं अग्गिहारी दछिची छितानं। तियं पुट्ठि चोनं दिसा पूरि बानं॥
छं० ॥ १०१ ॥

भरं भूमि सरना रथं रथ्य थानं। दरं दूस दुरसासनं मुष्षि बानं॥
गंजं गाज जल सिंधुता पुट्ठि ओपै। कतं जास जुद्ध मतं लोक लोपै॥
छं० ॥ १०२ ॥

दिसी दिस्सि बानं समानं सुदेहं। मानों बाल प्रोढ़ा सुनारी सुनेहं॥
अयं तथ्य मारथ्य देवक्कि पूतं। हनै जुद्ध जैजरथ उडि सीस नित्तं॥
छं० ॥ १०३ ॥

इते षंघनी साजि जैजथ्थ भष्षै। बधै देव क्यौ ताहि हरि देव रष्षै॥
इतै वीर विश्वास करि धीर बोल्यौ। पछै पंघनी साथ जैजरथ तोल्यौ॥
छं०॥ १०४॥

## शाह का धीर से कहना कि प्राण का मोह करने वाला क्षत्री सच्चा नहीं है।

दूहा॥ मिले धीर पुंडीर वर। वर गोरी सुरतान।
बोलि बीरवर धीर कौं। चित सालै चहुआन॥छं०॥१०५॥

कवित्त॥ सें पुच्छै सुरतान। अवे तूं चंदह नंदन॥
तोहि विरद इम कहै। अष वर वैर निकंदन॥
अवसानह संकरै। जीव रावत जो बंचइ॥
ता जननिय को दोस। मरत पची जौ संचइय॥
इह जीभ हाड बाहिर पिसुन। एतौ झूठ न झंषियै॥
कहुं धीर लाज कारन कवन। प्रान राषि पति मुक्कियै॥
छं०॥ १०६॥

## धीर का उत्तर देना कि मेरा जीवन अपनी पैज निर्वाह के लिये है।

न में षग्ग संग्रहयौ। न में सिंगिनि कर मंचिय॥
नहुं टार्यौ टंकुर्यौ। पति लग्गत तन संचिय॥
टर्यौ सु हूं जोगिंद्र जानि। धीर धीरं तनं गहयौ॥
चाव दिसि बिंटयौ। षुंदि षुंदहि मन रहयौ॥
बुल्ल्यौ जु बोल चहुआन सौं। सो न बोल छंडै हियौ॥
गहि साहि हथ्थ अप्पन कह्यौ। ताहि पैंज कारन जियौ॥
छं०॥ १०७॥

## बादशाह बचन।

पत्ति पैंज संसद्दी। पैंज पति ही सौं बंधी॥
पत्ति सरन पति मरन। सूर पति पति सौं संधी॥

पति रत्तन संसार। गयौ पति हथ्थ न आवै॥
कोटि बत्त जो करै। पत्ति रुच्छी बल गावै॥
पति गये मरन दीनै नही। सो पति तन किम संग्रहै॥
आदर सु पत्ति दीजै जगत। ते पति रंन संग्रहि रहै॥छं०॥१०८॥

## धीर पुंडीर वचन।

है प्रक्ति पत्ति कुपत्ति। सही पति मो धीरह धरि॥
धरी जु अधरी होंहि। सही पति तेह होइ नरि॥
इही काज है पत्ति। धीर बोल्यौ परमानं॥
कंक बंकु करि साहि। कह्यौ बंधन चहुआनं॥
रीस सम संम अच्छिर लिपी। में अरि बंधन साम उर॥
करतार हथ्थ केती कला। तौ करौं पत्ति संची सु धर॥छं०॥१०९॥

## बादशाह बचन।

सुनत आप सुरतान। धीर चंदो नहि चुक्कै॥
जो दरोग पुंडीर। घाहि गोरी गहि मुक्कै॥
सुद्ध जुद्ध संग्राम। षेत षुरसान षिसावहि॥
ता दिन धार हिस्सार। कोट चंदह तंन पावहि॥
धीर नाम ता दिन लहौ। कहहि काम आषर कहहि॥
राजान काज पुंडीर न्रप। च्यार दिसा बंध्यौ रहहि॥छं०॥११०॥

## धीर पुंडीर बचन।

पैंज काज पारथ्थ। नाथ दुरजोधन भंज्यौ॥
पैंज काज श्री राम। लंक दसकंधर गंज्यौ॥
पैंज काज श्री कृष्ण। कंस मथुरा महि मार्‍यौ॥
पैंज कज बलिराय। रूप बामन करि गार्‍यौ॥
हुं पैंज काज बंधन सहिस। तुम बंधन चष्षे नही॥
ज्यों तेल नीब वपु तिलछही। ते साहि इसी बत्तो कही॥छं०॥१११॥

## बादशाह बचन।

धीर नाम तुहि धरिग। धीर रन होय तो जानौ॥
भरगि चंड धर संड। नयन दिट्ट सुलतांनौ॥
नेज अग्र धज अग्र। अग्र बंबरि ढाहानौ॥
अग्र बान कम्मान। पंष विद्धहि दीवानौ॥
जंबूर नारि हथ्थ नारि घन। धन अग्राज फुट्टै अगा॥
इका हहक्क फुट्टै हिया। तब न कोय लग्गै सगा॥छं०॥११२॥

## धीर पुंडीर बचन।

तं दीठी तिहि बेर। साहि तत्तार न सग्गा॥
बजि अग्राज जंबूर। छोरि षुरसानी भग्गा॥
अप्पानी घर बत्त। मत्त ओही तूं जानै॥
जे दद्धौ होंहि दूध। फूंकि सों मही असानै॥
हों धीर धीर पग मंडिहौं। जो तुम परषन पग मंडिहौं॥
म्रगराज हाक ज्यों म्रग्गनिय। यों देषत सत छंडिहौं॥
छं०॥११३॥

सोई सेर जिहि सेर। भरकि कुंभी कुंभ भंजै॥
सोई सेर जिहि सेर। गाज अप्पन बल गंजै॥
सोई सेर जिहि सेर। पुंछ पटकत धर कंपै॥
सोई सेर जिहि सेर। देव दानव जिय चंपै॥
सोइ सेर साहि गहिकर करन। अजापुत्त जिम आनिहों॥
मुष बोल सास जो धीर हिय। तो पकरि लेउं सुरतान हों॥
छं०॥११४॥

## बादशाह बचन।

फुनि जंपै सुलतान। धीर तैं झूठ्यो बोल्यौ॥
किन सायर थाहयौ। मेर किन हथ्थह ठेल्यौ॥
किने सूर संग्रह्यौ। किने सपन धन पायौ॥
कौन सिंघ सो छुट्टि। षेलि जीवत घर आयौ॥

सुलतान दीन साहाब सौं। एतो झूठत तूं कहहि ॥
जिहि सोत फेर हथ्थी फिरहि। किम सु साहि जीवत गहहिं ॥
छं० ॥ ११५ ॥

## धीर पुंडीर बचन।

जो विषधर विष अधिक। तौ गरूड़ सौं ग्रब्बस मंडय ॥
जो गल्ल गज्जै सिंघ। तौ कोरि कुंजर बन छंडय ॥
जो घनं सघन मिलंत। तौ पवने परचंड निकंदय ॥
जो पसरहि रवि किरन। तौ कुह फट्टय धग बंदय ॥
जो राह चंपि चंदह गहहि। तो का तराएन रष्षनौ ॥
जद्दिनह साहि चहुआन रन। तद्दिन धीर परष्षनौ ॥
छं० ॥ ११६ ॥

## बादशाह बचन।

बे हिंदू के कुफर। बोल भी कुफरे कट्टै ॥
गांमी गल्ह गमार। रोस अपनौ ना छंडै ॥
बंधि लिया बलहीन। मरन को काहे चाहै।
जब उंदर जम ग्रहै। गुरब सों लत्ता वाहै ॥
पैज पटंतर सब सही। जब कछु देषि दिषाइयै ॥
हुं हुं करंत अप्पन मुषै। रासभ ओपम पाइयै ॥
छं० ॥ ११७ ॥

## धीर पुंडीर बचन।

रवि न उगै अथ्थवै। चंद चंदनो ना छंडै ॥
कोड़ करक्कै उढ़। बसुह बासग भरु छंडै ॥
पवन थक्कि थिर रहै। अरु जलधिहि जल षुट्टै ॥
मेर डुलै डग मगै। धूअ तुट्टै रवि छुट्टै ॥
जौ ना जियत साहहिं गहौं। जौ न पग्ग पारौं रवरि ॥
तौ बोल धीर धरनी षिसै। बसै न हर अंगह गवरि ॥
छं० ॥ ११८ ॥

## बादशाह बचन।

बे हिंदू नादान। साहि पावस पल्लान्यो॥
है गै घंट निसान। नाग मुक्तिन घर जान्यौ॥
हम हमीर हलबलै। करे द्रिगपाल दसों द्रिसि॥
कमट विमट होय पिट्ठ। डिट्ठ ठढ कोल इला धसि॥
हाकंत हक्क कंपै भवन। तहां तूं मो सम्हौ भिरै॥
आदान बंध हिंदू सहर। गहहां करि मिट्ठे चरै॥ छं० ॥ ११९॥

## धीर पुंडीर बचन।

कहै धीर सुलतान। बात संभरि इक मेरी॥
तो अग्गें में बहुत। गल्ह अष्षी बहुतेरी॥
बयना बल बंधिया। बयन रहसी संसारा॥
तबहि हक्क बज्जसी। सब जानसी जहारा॥
आवद्ध साहि सन्नाह कसि। पग्ग मार मच्चायहौं॥
गहि साहि आन चहुआन पै। बंदर जेम नचायहौं॥छं०॥१२०॥

## बादशाह बचन।

तब गोरी सु बिहान। धीर पुच्छै सुमत्ति कल॥
देव द्रष्ट बंधिहै। मंच बंधिहै कि संसल॥
छलकि प्राण बंधिहै। सपन बंधै सुबिहानं॥
देव केव अवतार। हाम बंधन परमानं॥
बंधिहै बंधि रसनह सुबल। रुच बंधन जो छुट्टिहै॥
को मंच बीर आरिष्ट बल। कै भूत फिरस्ता पुट्टिहै॥छं०॥१२१॥

## धरी पुंडीर बचन।

उदर ताम उच्छरय। जाम वसि परि न बिलारह॥
मच्छताम तरफरय। जा मनह रुध्य उजारह॥
गंवर ताम गड्डवय। जा मनह केहरि गज्जय॥
हिरन फालतां करय। जा मनहि चीतौ सज्जय॥

सुमेर ताम गरु अत्तनह । जब न हनू गह्न करि कटय ॥
असमस समूह दल तब्ब बल । अब न धीर पष्षर चढ़य ॥
छं० ॥ १२२ ॥

## बादशाह बचन।

रे धीर झुंठ चिंतवत । सेस लभ्भै न अंनि घर ॥
दस सत फंन समूह । जीह विय विंव बीय बर ॥
मरदं जु मुष्ष उचरौ । जु कछु मग्गै भर भीरं ॥
तिनं साह कों थाप । डरै अब बंधन धीरं ॥
हम कहुं अधर बट्ठे बढग । बढिग मीर मीरां करसि ॥
जम हथ्थं परै जो छुट्टिहो । तौं सामि बचन करिहौ परसि ॥
छं० ॥ १२३ ॥

## धीर पुंडीर बचन।

कहै धीर सुलतान । आन जल्लाल साहितौ ॥
जब ढल्ला ढींचाल । माल उथ्थाल देषिमौ ॥
आषाढां डंडूर । तुट्टि तरवर तन पत्तिय ॥
उट्ठि सेन जल जेम । रेनि घल्लो गल वध्यिय ॥
जिहि तेज तुंग लोगहि तरनि । जनु अयास फट्टै किरनि ॥
दैवाह द्रुग्ग मत्तह भिरन । जन बिसासि हिंदू नरन ॥
छं० ॥ १२४ ॥

## बादशाह बचन।

ढिल्लिय ढाहिं अवास । पकरि चहुआनह दंडों ॥
मोरों मत्त गयंद । सज्जि सब सेन बिहंडों ॥
चौरासी मंडली बंधि । अप्पन घर आनौ ॥
बैरावत सुनि बात । पैज अप्पन परवानौ ॥
सुरतान कहै साहाब दी । षिनक गुसामन महि धरौं ॥
गढ़ भूमि बंक तौ ढाहिं करि । रनवासौ घर घर करौं ॥
छं० ॥ १२५ ॥

## धीर पुंडीर बचन।

गज्जिं लेउं गज्जनौ। सार सुरतान विहंडौं ॥
मारौं मेछ मसद। टेक मनमहि नहिं छंडौं ॥
करौं जंग जल्लाल। ढाल देषे तुहि अप्पिनि॥
नचहि बीर बेताल। छुड पूरौं पसु पंषिनि ॥
बट्टौं जु पहुसि पंजर पलन। बलह अप्प कह मुष कहौं ॥
इह सच रंच भुट्टिय नहीं। तौ पति सुपंच मभझह लहौं ॥
छं० ॥ १२६ ॥

## बादशाह बचन।

गर जंजीर संकरिय। पाय बेरी को कट्टइ ॥
षनि न गड्डि गड्डियहिं। तेज बल सबें निघट्टइ ॥
तुहि धीरंतन नाम। पानि पीयर लो डुल्लहि ॥
लज्जहीन हिन लज्ज। बचन फुनि फुनि कहि बुल्लहि ॥
जितौंब कालिह ढिल्लिय नयर। समर न को संमुह रहय ॥
सुरतान कहै साहाब दी। तब पयज्ज किम न्निब्बहय ॥छं०॥१२७॥

## धीर पुंडीर बचन।

तोरौं तरपि जंजीर। थाट मोरौं साहन तुअ ॥
मोहि बचन नहिं टरहि। गंग नहिं बहै अटल धुअ॥
कीर भार उच्चरहि। सात सायरनि दिगंतर ॥
बरुन बयन पिट्टियहि। काल पिष्पियहि निरंतर ॥
पुंडीर धीर इम उच्चरय। कौंन झूठ झंषै बयन ॥
गहि पातिसाहि राजन अपौं। इह चरिच पिष्षौं नयन ॥
छं० ॥ १२८ ॥

## बादशाह बचन।

वे हिंदू नादान। बोल बोलै सिर पष्षै ॥
कौं ढंकै असमान। कौंन सायर मुष भष्षै ॥
किनें पवन झिल्लिया। किनें गहि बासग नथ्था ॥

किन जमरा जित्तिया। किनें कंद्रप्प सुमथ्था॥
बडा जु बोल मुषन्ह निया। इता बोल सिर पर धरैं॥
सुलतान कहै पुंडीर सुनि। इह क्यों ही पूरी परै॥
छं० ॥ १२९ ॥

## धीर पुंडीर वचन।

घन अंबर ढंकिया। अस्ति सायर मुष पिन्ना॥
योगं पवंन भक्षिया। क्रिसन गहि बासग लिन्ना॥
गोरष्ष जम जित्तिया। हनू कंद्रप्प न लग्गा॥
हुवि अग्गै सुलितान। भिड़े कोई दिन भग्गा॥
चहुआन साहि दिनई समर। संजि चतुरंगम चढ्ढयौ॥
अथ्याह नीर ढीमर जिमें। सुमीन तनी परि कढ्ढयौ॥
छं० ॥ १३० ॥

## बादशाह बचन।

हालैं हसम हमीर। कीट हिंदू दल षुंदों॥
आन साहि जल्लाल। जोर जोगिनिपुर रुंदों॥
बेकुसाब आसा गमार। गरुअत्तन गामिय॥
बोलांही रावत्त। थंभ फुट्टै बहु नामिय॥
आहत्त घात आमिष्प जिम। ग्रामी ग्रब कट्टों रसें॥
मति नसैं प्रान रष्षै पुरिस। छंची छल छंडै हसैं॥
छं० ॥ १३१ ॥

## धीर पुंडीर बचन।

छल छंडे सुरतान। वलनु छंडयौ जिंहि बंधौ॥
जीय रष्यौ पतिसाह। जियत पति साहह संधौ॥
तन रष्यो तजि टेक। तेग रष्यो षुदि आलम॥
जब ढंकों करिवार। ढोल लग्गौ मुष लालन॥
जल जात घात रष्षै जलैं। दूध विनट्टौ दूध हिय॥
लजनीय साहि गज्जन मनह। धीर पयंपै अरय विय॥छं०॥१३२॥

## बादशाह बचन।

जे दरिया उत्तरिग। षलह षडुरे न कल्लय॥
जोगिनि बरं गंजरिग। पवन पल्लरे न हल्लय॥
जिन भैरू भरमंत। ते डरें डंकनी न डक्कं॥
जिन पंचाइन धक्क। ते जाहिं जंबुक्क न हक्कं॥
हों गोरी नरिंद दैवान गति। नंद पुंडीर न चंद सुअ॥
सामंत लाष सध्यं मिलय। सहै न साहस अम्म सुअ॥छं०॥१३३॥

## धीर पुंडीर वचन।

सोई पारथ भारथी। नमें निकस्यौ मुष का बनि॥
सोइ किस्न करतार। दुक्यौ स निडर गल्हावनि॥
सोई सूर बलसूर। राह गलि जाय गहंतह॥
सोई ग्राह गजराज। चक्र करि हन्यौ श्रिकंतह॥
मति करै साहि मन गर्व तुअ। छिति नाम जोहै छचिय॥
निर बीर पहुमि कबहूं नहीं। बडां बडेरी बसु मतिय॥
छं०॥१३४॥

बोल बोलि चहुआन। बचन सो बचन पल्लट्टों॥
फुनि हम चढ्ढि पुंडीर। तोरि तासह नहि मिट्टों॥
तीन लाष उमराव। सहस संभरि सत्तरि वै॥
इह जानि जोनि यान। करै सरहन सब नर वै॥
गज अगंज भूपति सरन। गोरी सयन निघट्टिहों॥
इम कहै धीर सुरतान सौं। बाउ बहंतौ कट्टिहों॥छं०॥१३५॥

हों दरोग जो कहौं। सूर उग्गै पच्छिम दिसि॥
हों दरोग जो कहौं। ईद उग्गमे कुहुं निसि॥
हों दरोग जो कहौं। बयन चुक्कै दुरवासा॥
हौं दरोग जो कहौं। बोल बोलै बिन सासा॥
बोले सुधीर जो बोल मुष। तो पाहन रेषा सरिस॥
पतिसाह हथ्थ साहों नहीं। तौ चंद पुत्त जायौ न अस॥
छं०॥१३६॥

## बादशाह बचन।

इह दरोग बोलंत। परै दो जिग चंदानी॥
इह दरोग बोलंत। सेन हंसिहै सुलतानी॥
इह दरोग बोलंत। लाज छुट्टै पति घट्टै॥
इह दरोग बसि जीह। लीह षंचै सब सट्टै॥
बड्डा न बोल बड्डा कहै। चाड परंतह जानियै॥
धावंत धीर से धावनो। ते रावत बष्षानियै॥ छं० ॥ १३७॥

## धीर की बातें सुनकर तत्तार खां का तलवार की मूठ पर हाथ रखना।

सुनै बोल सुलतान। धीर संमु जे सद्दिय॥
बे काजे हाजुर। गमार नाजुर हूं बद्दिय॥
तपित षान तत्तार। मुट्ठि तत्तार सु संगिय॥
षंचि क्रन्न आवरन। दिट्ठ सुरतान जु ढिग्गिय॥
बिय करै दरस आलम चरित। मुहि सुंचच्च बचा बगसि॥
आनंदू चंद बचा इहां। मुनि सु गल्ह लग्गै रहसि॥
छं० ॥ १३८॥

## तत्तार खां बचन।

एही गल्ह सुनंत। गाल फारो लगि क्रन्ना॥
एही गल्है सुनंत। षाल कढ्ढौ दुहु दन्ना॥
एही गल्ह सुनंत। प्रान कढ्ढौ अप्पानिय॥
एहं रम्य आरम्य। द्रोह लग्गै सु बिहानिय॥
आदिट्ठ पिट्ठ हिंदू अहं। कै छुरान गढ्ढौ गलां॥
चढ़ि तुरकवान हिंदुवान दिसि। हल सहाय कीजै हलां॥
छं० ॥ १३९॥

## धीर पुंडीर बचन ।

बे कांयर बल हीन । पकरि सिंगिनि क्या तोलै ॥
बे तत्तार गांमी गमार । साहि अग्गैं क्यौं बोलै ॥
अग्गैं आउ मेदान । ज्वान मरदुन मुष जोरहि ॥
आनि अजा गहि सिंघ । हाड़ पवनं तन तोरहि ॥
कोतिग्ग साहि आलम निजर । षेत भंजि भूको करौं ॥
दस षान और तुम दष्खिये । में चंद बचा तुमतें डरौं ॥छं०॥१४०॥

## तत्तारखां बचन ।

अरे धीर नादान । बोल बोले बरबंके ॥
चढ़त साहि साहाब । दीन तीनो पुर संके ॥
तुम पतंग जड़ जीव । क्यों सुदिग पालन मोरे ॥
अति सूरौ जो चना । होइ पब्बय फुनि फोरे ॥
बोलियहि बोल अप्पां सरिस । बे मजाद बचंनह न कहि ॥
करि रहम साहि रष्खै तुझै । नतरु पबरि अबही लहहि ॥छं०॥१४१॥

## धीर पुंडीर बचन ।

कहै धीर तत्तार । षान सुनि बत्त हमारी ॥
चढत साहि साहाब । दीन को सहै सहारी ॥
हों सुधीर पुंडीर । एक लष्षा दह जानों ॥
तुम देखत हरि साहि । सेन समुह सु भानौं ॥
तुम तुरक मान हिन्दुअ सु हमं । हम तुम पटंतर कहौं ॥
हम परत स्वामि परहथ परें । तुम परहथ जीवंत रहौं ॥छं०॥१४२॥

## तत्तार खां का कुपित होकर धीर पर तलवार उठाना और शाह का हाथ धर लेना ।

हाला हल किय नेंन । हथ्थ तत्तार पथारह ॥
छीन लिये सुरतान । रोस देषंत अपारह ॥

या बुड्डें या बुड्ड। याहि छंडै जु बड़ाइय ॥
पुच्छैं षां षुरसान। अंग औसाफ चढ़ाइय ॥
आदांन बंध हिंदू दुहां। झुट्टाई सच्चा करहु ॥
पट्टाय चंद बच्चा घरां। पच्छैही चंपौ धंरहु ॥
छं० ॥ १४३ ॥

## धीर पुंडीर बचन।

जे जीवहि अंगमें। सही ते जमहि न भग्गै ॥
जे कामहि मह मत्ते। लहकि ते कुलहि न लग्गै ॥
जे स्वारथ संदेस। देह दष्षै न परष्षै ॥
जे जोगह जंगमें। नेह नारी न निरष्षै ॥
डऱ्यौ न साहि डंबर डरनि अंमर लगि हको सयन ॥
मो धीर नाम ब्रह्मह धरिग। चंद पुत्त जम्महु भय न ॥
छं० ॥ १४४ ॥

## बादशाह का धीर के बल की परीक्षा के लिये उसे उत्कर्ष देना और धीर का वृक्ष उखाड़ना।

साहिबदी सुरतान। कहत पुंडीर धीर सुंनि ॥
धात षंभ में संग। फोरि तैसो बल करि फुनि ॥
मुह अग्गै दरखत। षान इहि बँधत हथ्थिय ॥
सो नंषो ऊपारिं। जोर दिष्षै सब सथ्थिय ॥
हनुमान लंक जिम चंदसुत। बढि गुमान हिमगिरि सिखर ॥
धक धूनि बथ्थ भरि हथ्थ गहि। जर समेत षेजर उषरि ॥
छं० ॥ १४५ ॥

## शाह का धीर से कहना कि मांग जो मांगना हो।

दूहा ॥ षूब षूब सुरतान कहि। षूब धीर बल तुझ्झ ॥
मंगि मंगि जो मंगना। सोब समप्पौं तुझ्झ ॥
छं० ॥ १४६ ॥

श्लोक ॥ यावत् दरिद्री सोपि। यावत् साहि न द्रष्टया ॥
लिलाट लिखितं धाता। दारिद्रनो पलायते ॥ छं० ॥ १४७ ॥

## धीर का कहना कि मुझे किसी बात की भूख नहीं केवल तुझे पकडना चाहता हूं।

कवित्त ॥ ज दिन जननि हौं जनिग। त दिन बाजे बहु बज्जिग ॥
तद्दिन बंस पुंडीर। बिरद बानै मुहि सज्जिग ॥
तद्दिन मान महंत। तद्दिन पट्टो लिपि हथ्थह ॥
तद्दिन गाम कुट्टार। राव रावत मुहि सथ्थह ॥
असपत्ति सेन दल गंजि हौं। धीर नाम तादिन लहौं ॥
बासन पसाव तादिन लहों। जबहि साहि जौवत गहौं ॥
छं० ॥ १४८ ॥

## बादशाह बचन।

चंद नंद मति मंद। तोहि परतीत हियै यह ॥
आसानी असपत्ति। जुद्ध करि कै लैहूं गहि ॥
जुद्ध करत जौ मुऔ। मोज इह किन कों दिज्जै ॥
इह संसार निरास। आस छिनह्व नह किज्जै ॥
न्वपनंद निद्धि न विगड जड। सो जल की जल मे रहिय ॥
करतार मौज रोजी करत। इह मनुष्य हथ्थह नहिय ॥
छं० ॥ १४९ ॥

## धीर पुंडीर बचन।

जब लगि पंजर सास। आस तब लगि ना छंडौं ॥
जब लगि हियै हुंकार। साहि दल बल करि पंडौं ॥
जब लगि कर पग जोर। मानि मच्छर नह मेलौं ॥
जो काया कायंम। ठाट साहिब क्रम टेलौं ॥
सुलतान षान उमराव सह। गह गृहिये गुर गाहिहौं ॥
इहि हस्त हथ्थि भंजे हलक। सही साहि तो साहिहौं ॥
छं० ॥ १५० ॥

## शाह का धीर को सिरोपाव और निज का घोड़ा देना।

तंब हँसिय साहि सुरतान। उंच सिरपाव मँगायौ ॥
जो सुरतानह पाट। तुरिय सोई पल्ल नयौ ॥
राग वाग पष्पर समेत। तहौ तुरत निवाज्यौ ॥
पर्यौ निसानन घाव। जानि विय भद्रव गाज्यौ ॥
चौदह सै गैंबर गुरहि। सहजहि सेन समूह दल ॥
सुरतान कहै स्वइावदी। अब किन सज्जसि आब बल ॥
छं० ॥ १५१ ॥

## धीर का घोड़े पर चढ़ कर कहना कि इसी घोड़े पर से तुझे पकड़ूंगा।

जपौ तुरी चढ़ि मंच। बीर चवदह सें सथ्यह ॥
मनं ग्रब्ब पुंडीर। साहि ग्रहिहों से हथ्यह ॥
विद्वारो गज जूह। सुंड मुंडन महि पिट्टौं ॥
तीन लष्प सत्तरि। सहस करिवर वर कट्टौं ॥
जित्तव अब्र हिंदू तुरक। भिरों बहक्कि पचारि रन ॥
पुंडीर धीर इम उच्चरै। मम संकहि सुरतान मन ॥ छं०॥१५२॥

## शाह का कहना कि तू चल मैं भी तेरे पीछे आया।

तेक दीन कब्बाय। तुंग तेजीं दह बाहिय ॥
जर जीना संजोइ। रेसरय सनमुष छाइय ॥
लै हिंदू आदान। जाय चंगा पब्बाइय ॥
हों आयो तों पच्छ। लष्प लोहा सम्हाइय ॥
सल्लाम आलि आलंम करि। सामंता सब्बां कहौ ॥
जंगाह राज बज्जै भरां। तुम राको क्कानी रहौ ॥ छं० ॥ १५३ ॥

## धीर पुंडीर बचन।

जेते जिते क्रवाइ। साहिं मोंदी में हथ्यहि ॥
वे हिंदुअ वे मुसलमान। कथ्थां वे कथ्यहि ॥

मे झुट्ठा सच्चाब। साहि जो जंग न नंचा॥
जो जंग न नंचिया। तो साहि झुट्ठा में सच्चा॥
अप्पाह बोल बप्पां हलै। अप्पां बोल, सु हथियया॥
चंगोह चंद बर्त्ता बचन। इह सलाम करि कथ्थिया॥छं०॥१५४॥

## धीर पुंडीर को पान देकर बिदा करने के बाद शाह का देश देश को परवाने भेज कर सहायक बुलाना और चढ़ाई की तैयारी करना।

धीर हथ्थ दिय पान। षान षुरसान निसानह॥
कदलि वास कैलास। रोह ठुट्टै फरमानह॥
हबस रूम गष्षरिय। भोज भष्षर भर भारिय॥
अंग कुलंग तिलंग। देस नंदन निरवारिय॥
जल्लाल दीन नंदन नवल। सुनि अवाज इहि निज रुकिय॥
पुंडीर धीर पच्छै पहर। मिलि मिलान जोजंन दिय॥छं०॥१५५॥

धीर हथ्थ दिय पान। पच्छ निसान जु सद्दे॥
षान तेग तत्तार। तरपि कस उप्पर बद्दे॥
दह दीहा आरंभ। गंभ गंभीर उपट्टे॥
जाने बद्दल उत्तरा। देस दच्छिन पुर छुट्टे॥
आडंड षंड जोगिनपुरां। धरि लग्गी संभरि धरा॥
प्रथिराज देव उप्परि दपत। इह हल्ली यंह बेघरा॥छं०॥ १५६॥

## शाह की सुसाज्जित सेना की चैत्रमास से उपमा वर्णन।

सज्जि फौज सुरतान। अग्ग माधव रिति जानिय॥
पच लता वैरष्ष। पहुप जंडा सनमानिय॥
छच नूत मंजरि समान। ढाल नव ब्रष्य पवन हलि॥
गज्जि गहर नीसान। जोर जल्लाल उमड़ि चलि॥
सजि फौज मंत गरजंत अग। मनहु पवन बद्दल हलिय॥
कहि चंद बंद बरदाइ बर। देषि धीर मन भइ रलिय॥छं०॥१५७॥